श्री वीतरागायनमः ॥

जैन गीतावली ॥

पुत्रोत्पत्ति, ज्योंनार, विवाह, मुण्डन, वन्दनादि शुभअवसरों पर स्त्रियों के गाने योग्य उत्तम २ गीतों का संग्रह.

श्रीयुत श्रेष्टिवर माणिकचंदजी जे०पी०

बम्बई निवासीकी सुपुत्री

विदुषी मगनबाई जी की इच्छानुसार.

मूलचन्द सोधिया-गढ़ाकोटा

(जिला सागर) द्वारा संग्रहीत.

मुंबई—"निर्णयसागर" प्रेसमें [illegible]

रामचन्द्र पाणरंगद्वारा मुद्रित.

प्रथमावृत्ति १०००] जैन सं०२४३५ स०१९०९ [मूल्य ।)

भूमिका ॥

प्रगट रहे कि कालगति अथवा अन्य लोगों की सङ्गति के कारण जैन सरीखी उत्तम जाति की स्त्रियों में भी मङ्गलीक गीतों की जगह निंद्य और फूहड गीतों के गाने की पद्धति चल निकली है. इस कुप्रथा के निवारणार्थ कुछ काल पूर्व चन्देरी (बुन्देलखण्डप्रान्त) के धर्म प्रेमी भाई जी श्रीयुत गिरवरदासजी, देवीदासजी आदि सज्जनों ने स्त्रियो के गाने योग्य उत्तम २ धार्मिक गीत रचकर प्राचीन पवित्र-प्रथा का जीर्णोद्धार किया था. तिसही का फल है कि वर्तमान में बहुधा बुन्देलखंड प्रान्त की धर्मबुद्धि स्त्रियां उत्तम २ शिक्षादायक गीत गातीं है. किसी को दो, किसी को चार याद है परन्तु ऐसा पुस्तकाकार सङ्ग्रह कोई भी नहीं, जिसमें हरएक अवसर पर गाने योग्य दो २ चार २ गीत हों. इसलिये चन्देरी, बंडा, सागर आदि स्थानों से एकत्र करके ये पुस्तक संग्रह किई गई है. इस सत्कार्य का यश उपर्युक्त महाशयों का है, हां इतना अवश्य है कि कई जगह लोगों ने जैनमत के विरुद्ध शब्द मिला दिये है, जिनको मैंने अपनी तुच्छबुद्धि अनुसार संशोधन कियाहै, तिसपरभी दृष्टिदोप अथवा प्रमादवश इसमें कोई अशुद्धि रह गई हो या पाठान्तर होगया हो तो उस दोप का भागी मैं हूं. अतएव सज्जन मण्डली से निवेदन है कि जो भूलें उनको इस पुस्तक में ज्ञात हों वे कृपया मुझे सूचित करें ताकि पुनरावृत्ति में उनका मार्जन किया जाय ॥

जिन सज्जनोने इस पुस्तकके संग्रहमें प्राचीन तथा निजकृत नवीन गीत भेजकर सहायता किई है वे धन्यवाद के पात्र है और विशेष धन्यवाद के पात्र बम्बई निवासी श्रेष्ठिवर माणिकचन्दजी जे. पी. और उनकी सुपुत्री विदुषी मगनवाईजी है जिनकी प्रेरणासे यह ग्रंथ संग्रह हुआ है॥

यदि इस पुस्तक के द्वारा जैनजाति का कुछ भी उपकार होगा तो मै अपना परिश्रम सफल समझूंगा.

कार्तिक वदी १४ सं० ६५
श्रीवीर निर्वाण सम्वत् २४३४

मूलचन्द सोधिया,
गढ़ाकोटा,
जि० सागर.

शुद्धाशुद्धि पत्र.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
८	५	ग्रंथ	ग्रंथ
१९	५,६	सुमतीदेय सुमति	कुमती देय कुगति
२३	१२	हाय	होय
२६	१८	युति	थुति
४८	१०	तुखार	तुषार
७८	२१	पथ	पद

अनुक्रमणिका ॥

विवाह में ॥

४८	जात करम कोपनियां	सुघर चेतन वहु पनियां को निकरी.
४९	,,	ऐसे चेतनराय पनिया को निसरे.
५०	सुनोजू	लाख चौरासी योनिमें भटकौ.
५१	,,	कानासे आये कहां तुम जैहौ.
५८	मोरे लाल	धन २ होवे रजमत वेटी.
५९	,,	सजना हो मेरी शील चुनरिया.
६०	वाजें नेवरा घने	आज अनन्द वधाये तो वाजें.
६१	,,	चेतन राय कुमति निकारियौ.
६२	टांडो लाधें जोवन जरवा	पूरव लाधे पश्चिम लाधे.
६४	रसिया	ऐसे नेमीश्वर रसिया.
६५	,,	जा नरदेही तुमने पायलई.
१०१	घोरी (सुनौजू)	झूनागढ से तेजन आई.
१०२	,, (जू)	नेमीश्वर को व्याहु वखानों.

चन्दना तथा मुंडन के समय ॥

२	हांजू	श्रीभगवन्त भजौ अतिशय युत.
४	,,	प्रथम २ जिन पूजन कौ फल.
६	,,	ऐसे जनम नये धर २ के.
४३	भौरारे	पात्र अपात्र कुपात्र जु भेव.
४४	,,	चारों दान भली विधि देहु.
४५	,,	जिन दर्शन तें कह फल होय.
४६	,,	पंच परम सुमिरें सुख होय.

शास्त्र सभा के समय ॥

श्रावण ॥

माता का पुत्री को उपदेश ॥

(१) प्यारी बेटी ! जिस लग्न में तेरा विवाह हुआ उसी समय से तूं पराई होचुकी. अब तेरा यही धर्म है कि जिस भांति हमारे आधीन रहती आई है. उसी प्रकार अपने नवीन माता पिता अर्थात सास. ससुर की आधीनता में रहकर उनकी आज्ञा पालन करना ॥

(२) विवाह सम्बन्ध से तेरे कर्मानुसार जो पति मिला- है उसे सब से उत्तम और आदर योग्य समझकर उसके साथ नम्रता से रहना । स्त्रियों का सब से उत्तम और प्रशंसनीय कार्य पति की सेवा करना और उसकी आज्ञानुसार चलना है ॥

(३) अपने सास, ससुर, कुटुम्बी रिश्तेदार और पुरा- पड़ोस वालों से सदा अच्छा वर्ताव रखना, कभी किसी से द्वेष न करना और अपने जेठों बड़ों के सिखापन को मानना यही सुपुत्रियों का काम है ॥

(४) यदि पति किसी कारण तुम्हारा निरादरभी करे तो तुम भूलकर कभी क्रोध न करो और सदा नम्रता से अपने पति को प्रसन्न रखने का उपाय करो ॥

(५) सदा सब से सत्य और मीठा बोलना, कभी किसी की बुराई या चुगली न करना ॥

(६) प्रातःकाल सब से पहिले उठना और रात्रि को सब से पीछे सोना. खेल-तमाशे देखने की इच्छा न रखना और

न कभी औगुणकारी भोजन आप करना, न कुटुम्बियों को कराना, सदा ऋतु तथा घर के लोगों की तासीर का खयाल रखके रसोई बनाना ॥

(७) गृहस्थी के काम काज व देखरेख बड़ी सावधानी से करना और कोई भी काम दूसरे के भरोसे पर नहीं छोड़ना, फजूलखर्ची और ऊपरी दिखावट के लिये कभी हठ नहीं करना, सदा अपना घर देखकर चलना ॥

(८) सदा भले मनुष्यों की संगति करना, धर्म तथा धर्मात्माओं से प्रीति रखना ॥

(९) अधिक चटकीले, भड़कीले वस्त्र तथा जेवर न पहिरना, परन्तु ऐसा भी न रहना जिससे स्वच्छता और मर्यादा में बट्टा लगे अर्थात् सदा साफ और सादा वर्ताव रखना ॥

(१०) कभी भूलकर भी अपने पिता की धन सम्पत्ति, प्रतिष्ठा का घमंड न करो, और न कभी उस घमंड का इशारा पति, सास, ससुर, जेठ, देवर, तथा सखी सहेलियों आदिसे करो ॥

(११) स्त्रियों का मुख्य धर्म लज्जा है शील का रहना लज्जा के आधीन है, इस लिये सदा बहुत धीरे और नम्रतासे बोलो और धीरजसे चलो, जहां तक संभव हो कम बोलना चाहिये, खिल–खिलाकर हंसना महान अवगुण है ॥

हे पुत्रियो ! ऊपर की शिक्षायें तुम्हारी सारी जिन्दगी का आभूषण हैं ऐसा जान ग्रहण करो.

शुभेच्छु–एक माता.

पुत्री का वेंचना, नीच काम है.

अपनी तथा किसी दूसरे की लड़की के विवाह करने के बदले उसके पति अथवा पति के पिता से रुपया ठहराकर लेलेना पुत्री वेचना कहाता है ॥

इस संसार में सब मनुष्य सुख के लिये रात दिन मिहनत करते और चाहते हैं कि हमारे कुटुम्ब की गुजर होने बाद कुछ धन इकट्ठा भी हो. इस के लिये कितने लोग तो न्याय से धन कमाते हैं, परन्तु कितने पापी ऐसेभी हैं जो लड़की को वेचकर धन इकट्ठा करते हैं. ऐसे ही दुष्ट, अज्ञानी लोगों ने लड़कियों के पैसे लेने की रीति जारी करदी है यहां तक कि कई लोग तो हजारों रुपये इसी व्यापार में कमाते हैं ॥

हे भाइयो ! तनिक विचार तो करो, पुत्रियों के वेचने का ये खोटा रिवाज जारी होने से उत्तम जातियां तो एक तरह से मिटही चुकीं हैं, दिन २ उन जातियों की संख्या घटती जाती और बड़े २ कलंक और अन्याय होते हैं क्योंकि जब से धन के लोभियों ने यह रोजगार जारी किया, तब से हजारों गरीब विचारे तो विना व्याहेही मरजाते तथा धन लेकर जो लड़कियां वुड्ढों को वेचीं जाती हैं वहुधा उनके संतान नहीं होती और बालविधवा होकर जाति कुल की नाक कटाती हैं ॥

इस देश में अव तक दहेज (दायजा) देने की चाल है अर्थात् विवाह के समय लड़की का वाप कन्यादान के साथ २ अपनी शक्ति के अनुसार जमाई को कुछ धन भी देता है जो स्त्री–धन कहलाता और कर्म योगसे आपत्ति पड़ने पर लड़की के काम आता है. परन्तु खेद ! अतिखेद ! ! कि वह देना तो दूर रहा किन्तु कितने ही वेशरम तो देने के वदले उल्टा लेने लगे हैं और लड़की को कसाई के खूंटा वांध उसके सुख दुख का कुछ भी विचार नहीं करते, यदि सच पूंछो तो ऐसे लोग दिन दहाड़े लूटनेवाले डाकुओं के सरदार हैं क्योंकि डाकू तो गैरों को लूटकर छिपते फिरते. परन्तु ये वेशरम डाकूराज अपनी पुत्रियों का सर्वस लूटकर और उनको जन्म भर के लिये दुखी वनाकर मूंछों पर ताव देते हुए साहूकार वन वैठते है ऐसे नीचों के साहूकार पने पर हजार २ वार धिक्कार है ॥ यदि अपने घर में जातिको लाडू खिलाने की शक्ति नहीं है तो दामादको सिर्फ हल्दी का टीका लगाकर लड़की के पीले हाथ क्यों नहीं करदेते, परन्तु उन वेशरमों से ऐसा होवे कैसे ? उनको तो जातिवालों को लाडू खिलाकर भ्रष्ट करना और आप साहूकार वनना है. धिक्कार है इस खोटी वुद्धि को ! जो पुत्री तो वूढे, रोगी, कुचाल पति को पाकर इन के नाम को जन्म भर रोवे और ये टेढ़ी पगड़ी

वांधकर सेठजी वन वैठैं, ऐसी ही एक दीन पुत्री ने सगाई के वक्त अपने वापसे कहा था.

छंद—पांच सौ तो पहिले लीने तीन सौ की आरती॥
तुम काकाजी भूल गये हो मैं तो हंती हजार की॥
खोटे खरे परख लीजो मैं होजाऊंगी पारकी॥
मैं रोऊंगी तुम्हरे जी को, तुम होओगे नारकी॥ १॥

जिस प्रकार, कसाई वकरी, गाय आदि पशुओं को पाल-कर फिर इन्हें निर्दयी होकर मारता है, वैसे ही ये जाति के कुपूत, भाडखाऊ अपनी पुत्रियों को पालकर उनके गले में शिला वांधकर अंधे कुए में पटकते अर्थात् जल्दी मरनेवाले सफेदपोश बुड्ढों को अधिक धन लेकर वेंचदेते हैं जिससे वे एक दो वार जाकर ही विधवा होजातीं और वहुधा खोटे २ कर्म करने लगती हैं, कसाई तो पशुओंका वध करता और अपने वच्चों को पालता है परन्तु ये दुष्ट तो मनुष्यों का वध सोभी अपनी गरीव गैयों अर्थात् पुत्रियों का नाश करते हैं॥ इसलिये इन्हें कसाई के वावा समझना चाहिये, इनके मुंह देखने से पाप लगता और छूनेसे नहाना होता है॥ कन्या वेंचनेवालों का घर नरक समान और धन विष्ठा समान है. यदि सच्च कहाजाय तो इस पाप के भागी जाति के वे मुखिये धनवान और पंच लोग हैं जो इस कुरीतिके सहाई हैं और जो जान वूझकर गरीव लड़कियों का गला कटवाते और आप ऊंचा

माथा करके लांडू गटकते हैं इस से अधिक कहना व्यर्थ है.

हे जाति के खेवटिये पंचो और धनवानो ! क्या तुमको अपनी जाति की इस कुरीति द्वारा बरबादी होती देखकर रंच भी दुःख नहीं होता ? जो तुम शीघ्र ही इस दुष्ट पद्धति को नहीं रोकते और ऐसे निकृष्ट अभक्ष्य भोजन को नहीं त्यागते, क्या तुम्हारा यही पंचपना और मुखियापना है ? यदि तुम लोग ऐसे पापियों से खानपान न रखकर उनको दंडित करोगे अथवा सम्बन्ध होने के पहिले ही समझाओगे, रोकोगे, अगर नहीं मानेंगे तो शादी में शामिल न होगे, तो अवश्यमेव यह कुरीति शीघ्र मिटजावेगी और जाति–धर्म की रक्षा होने से तुम पुण्य के भागी होगे.

कन्याविक्रय से उत्पीडित.

एक सज्जन.
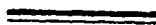
जैन गीतावली ॥

(नम्बर १)

(विलवारी चाल "हांजू" विवाह में)

प्रथमहि सुमति जिनेश्वर ध्याऊं, गुन गणधरहि म-
नाऊं कि हांजू ॥ टेक ॥ सार देव सुमनी देउ मोकों
दुर्मति के गुण गाऊं कि हांजू ॥ गारी एक सुनहु तुम
चेतन सुनत श्रवण सुखदाई कि हांजू ॥ १ ॥ तुम्हरी
नारि बुरे ढँग लागी समुझन नहिं समझाई कि हांजू ॥
अति परपंच भई दारी डोलै जोवन की मतवारी कि
हांजू ॥ २ ॥ पंचन तें दारी रति मानत कान न करहि
तुम्हारी कि हांजू ॥ काम क्रोध दोई जन खोटे जासु
बुलावन हारी कि हांजू ॥ ३ ॥ राजा मनमोहन तें बिगरी
मन फुसलावन हारी कि हांजू ॥ इनतो लाज तजी
पंचन की ज्यों गनिका जगनारी कि हांजू ॥ ४ ॥ आठ
करम की यहिन कहावत अपजस की महनारी कि
हांजू ॥ सात व्यसन की दूती चंचल चेतन नारि तुम्हारी
कि हांजू ॥ ५ ॥ या चंचल यारे की बिगरी अब क्यों

जात सुधारी कि हांजू ॥ तुम कहिये त्रिभुवनके नायक पटतर कौन तुह्मारी कि हांजू ॥६॥ और कहा परगट कर बरनौ देखहु मनहि विचारी कि हांजू ॥ ताके संग कहा तुम डोलौ कुलहि दिवावत गारी किं हांजू ॥ ७ ॥ भटकत फिरत चहूं गति मांही नरक सुरग गति धारी कि हांजू ॥ कबहूं भेष धरौ भूपतिकौ कबहूं कि कुष्ट भिखारी कि हांजू ॥ ८ ॥ कबहूं हय गय चढ़कर निकसत कबहूं कि पीठ उघारी कि हांजू ॥ कबहूं कि शील महाव्रत पालत कबहुं तकत परनारी कि हांजू ॥ ९ ॥ कबहूं कि टेढी पाग बँधावत कबहुं दिगम्बर धारी कि हाँजू ॥ कबहूं होत इन्द्र पुनि चक्री कबहूं कि विद्याधारी कि हांजू ॥ १० ॥ कबहूं कामदेव पद पावत कबहूं निपट भिखारी कि हांजू ॥ कबहूं सोलम स्वर्ग विराजत कबहुं नरक गति धारी कि हांजू ॥ ११ ॥ कबहूं पशू कबहुं त्रस थावर कबहुं कि सुंडाधारी कि हांजू ॥ नटके भेष धरे बहुतेरे सो गति भई है तुह्मारी कि हांजू ॥ १२ ॥ जासों प्रीति करन की नाहीं तासों कैसी यारी कि हांजू ॥ छोडौ संग कुमति गनिका कौ घरतें देव निकारी कि हांजू ॥ १३ ॥ ब्याहौ सिद्ध वधू शिव वनिता जो है निबाहन हारी कि हांजू ॥ तृष्णा छोड़ धरौ नित सम्बर तजहु परिग्रह भारी कि हांजू ॥ १४ ॥ एकाकी तुम

होरहु चेतन मानहु सीख हमारी कि हांजू ॥ इन विधि धर्म गहौ मुनि नायक राखहु चित्त विचारी कि हांजू ॥ १५ ॥ सोलह कारण भावन भावो जाप्य जपो नमो-कारि कि हांजू ॥ तीन रतन को हार बनाओ मो अपने उरधारी कि हांजू ॥ १६ ॥ श्रावक व्रत त्रेपन विधि पालो जनम जनम हितकारी कि हांजू ॥ जाय वरो शिव सुन्दरि नारि मानहु सीख हमारी कि हांजू ॥ १७ ॥ संवत् सतरा से तेनालिस फागुन तेरस जाणी कि हांजू ॥ लाल विनोदी चौरी गावत भूलहि लेहु सुधारी कि हांजू ॥ १८ ॥

(२)

(चाल "हांजू" वन्दना मुंडन आदिमें)

श्रीभगवन्त भजो अतिशय गुन छयालीसों गुणकारी कि हांजू ॥ टेक ॥ दस जन्मत दस केवल अतिशय चौदह सुरकृत भारी कि हांजू ॥ रुधिर सफेद पसेव सुमल बिन सुभग स्वरूप अपारी कि हांजू ॥ १ ॥ वज्र वृषभ नाराच संहनन सम चतुष्क अधिकारी कि हांजू ॥ देह सुगन्ध सहस इक लक्षण बल है अपरम्पारी कि हांजू ॥ २ ॥ मधुर वचन ये दस अतिशय जिन राज जन्म अवतारी कि हांजू ॥ सौ योजन दुर्भिक्ष नहीं आकाश गमन हितकारी कि हांजू ॥ ३ ॥ सब जीवन

बाधा बिन चौमुख नाहीं कवलाहारी कि हांजू ॥ बिन उपसर्ग बिना छाया नख केश न वृद्धि उचारी कि हांजू ॥४॥ सब विद्याके ईश्वर लोचन टिमकत नाहिं लगारी कि हांजू ॥ उचरत अर्ध मागधी भाषा षटरितु फूल सँवारी कि हांजू ॥ ५ ॥ दर्पण सम क्षिति सब जीवनके मैत्री-भाव अपारी कि हांजू ॥ शीतल मन्द सुगन्ध पवन क्षिति कंकर नहिं अनिवारी कि हांजू ॥ ६ ॥ गगन गमन कज ऊपर करते गंधोदक की धारी कि हांजू ॥ सर्व धान्य उपजें स्वयमेवहि नभ निर्मल जयकारी कि हांजू ॥७॥ सर्व जीव आनन्द चक्र-वृष मंगल द्रव्य प्रसारी कि हांजू ॥ अनन्त चतुष्टय वसु प्रतिहारज नव लब्धी अधिकारी कि हांजू ॥ ८ ॥ अतिशय युत चौंतीस विराजत छयालिस गुण अविकारी कि हांजू ॥ इहि विधि गुण अर्हंत सन्त भगवन्त महन्तन धारी कि हांजू ॥ ९ ॥ धन्य घड़ी धन भाग आज जिनराज भक्ति हम कारी कि हांजू ॥ गिरवर दास चरण कौ चेरौ दीजे मोक्ष बिहारी कि हांजू ॥ १० ॥

(३)

(चाल "हांजू" विवाहमें)

प्रेम प्रमोद रहस निजघर की गारी सुनौ वर नारि कि हांजू ॥ टेक ॥ जब सुधि आवत निज प्रीतम की

होत तयँ दुख भारी कि हांजू॥ मोरं प्रीतम सुगुरू सगाने कुमती नारि विगारी कि हांजू॥ १॥ मेरे पिया के सुभट महन्ता चार चतुष्टय धारी कि हांजू॥ जय सुचि करँ प्यारे चार सुभट की नय कुमती को मारी कि हांजू॥ २॥ हाँ सुमती शिव घर की सहेली पियसे करत पुकारी कि हांजू॥ अय पिय निज भट वेग सम्भारो चलिये निज घर सारी कि हांजू॥ ३॥ आतम सुमति सहेली राधिका लेगई शिव अधिकारी कि हांजू॥ सो निज धार सार आतम रस गिरवर वर शिव नारी कि हांजू॥ ४॥

(४)

(चाल "हांजू" मुंडन वन्दना आदिमें)

प्रथक २ जिन पूजन कौ फल सुनलो जिन सुख पायौ कि हांजू॥ टेक॥ सोमश्री कन्या व्रतवन्ती निर्मल धार दिवायौ कि हांजू॥ राज विभूति पाय पुनि सुरगनि देवाँगन मन भायौ कि हांजू॥ १॥ मदनावलि खगपति की नारी चन्दन पूज करायौ कि हांजू॥ छिनमें रोग विनाश भयौ जिहि सुरग रिद्धि वर पायौ कि हांजू॥ २॥ शुक सारो जुग भाव सहित जिन चरणन अक्षत नायौ कि हांजू॥ देव लोक पद पुज्य भये वसु रिद्धि विगत सुख पायौ कि हांजू॥ ३॥ दादुर पांख कमल

सुख लेकर अन्तिमजिन शिरनायौ कि हांजू॥ मरके स्वर्ग लोक सुख पायौ मेंडक चिन्ह लखायौ कि हांजू ॥ ४ ॥ सेठ सुहालिक बहुविधि चरुकर श्रीजिन पूजन ठायौ कि हांजू ॥ राज रिद्धि सुख भोग धार तप शिव-पुर पदवी पायौ कि हांजू ॥ ५ ॥ जिनको दीप चढा विन-यंधर सेठ सुरग फल पायौ कि हांजू ॥ नृप कुमार दश धूप खेयकर इन्द्रहि नाम कहायौ कि हांजू ॥ ६ ॥ देव विभूति महन्ती पाई सब विधि सुख उपजायौ कि हांजू ॥ जिनमति नारी कपि शुक शुध फल लेय जजौ हरषायौ कि हांजू ॥ ७ ॥ अन्तराय क्षयकार पंच विधि मोक्ष परमपद पायौ कि हांजू ॥ इक २ विधिसे जिन पद पूजे तिनने यह फल पायौ कि हांजू ॥ ८ ॥ अष्ट दरब ले धन्यभाग लखि पूजत पाप नशायौ कि हांजू ॥ तातें गिरवर मन वच तन करि जिन पूजन मन लायौ कि हांजू ॥ ९ ॥

(५)

(चाल "हांजू" भोजनके समय)

आदिनाथ जिन भोजन कारण नगर अयोध्या आये कि हांजू ॥ टेक ॥ षट् महिना बीते प्रभुजीको जोग अहार न पाये कि हांजू ॥ कोउ अहार विधी नहिं जाने आदर बहुविधि ठाने कि हांजू ॥ १ ॥ कोउ इक थार

भरें मुक्ताफल एकैं वस्तु सँजोवे कि हांजू ॥ एकैं पाट पटम्बर बहुविधि हाथन हाथ जुलीने कि हांजू ॥ २ ॥ एकैं अनी चुनी अरु पन्ना मुहर जवाहर लाये कि हांजू ॥ एकैं मुकुट मनोहर सुन्दर धारैं प्रभुजीके आगे कि हांजू ॥ ३ ॥ एकैं हस्ती जरद अमारी लै २ प्रभु पग लागें कि हांजू ॥ एकैं देश २ के राजा कहा २ लै धाये कि हांजू ॥ ४ ॥ राजा श्रेयांस पूर्वभव सुमरण सबही विधि समभाये कि हांजू ॥ तिष्ठ २ कह निर्मल जलसों प्रभु पग नमन जु कीन्हों कि हांजू ॥ ५ ॥ ऊंचौ आसन दे प्रभुजीकों पग प्रक्षालन कीन्हों कि हांजू ॥ भर अंजुलि ईक्षू रस दीन्हों पंचाचारज हुये कि हांजू ॥ ६ ॥ एक ग्रास द्वै ग्रास जुलीन्हें तीजो ग्रास न लीनों कि हांजू ॥ रत्न वृष्टि कीन्ही देवन ने जिन प्रभु दान जू दीन्हों कि हांजू ॥ ७ ॥ नवधा भक्ति करी प्रभुजी की सरधा शक्ति प्रकाशी कि हांजू ॥ चरण वन्दना कर शिर-नायौ बहु प्रतीति उर कीनी कि हांजू ॥ ८ ॥ ऐसौ समय निरख प्रभुजीको चतुरदास मन हरपौं कि हांजू ॥ गारी पुन्य सकल सुखदायक नरनारी नित गावो कि हांजू ॥ ९ ॥ भक्ति हेत कारण शुभ पदवी निश्चय शिवपद पावो कि हांजू ॥ अक्षय दान प्रभूजीको दीन्हो अक्षय तीज कहायौ कि हांजू ॥ १० ॥

(६)

(चाल "हांजू" वन्दना मुंडनादिके समय)

ऐसे जन्म नये धर २ के काल अनादि गमाये कि हांजू ॥ टेक ॥ गर्भ विषैं नाना दुख सहकर जन्म कष्ट करि पाये कि हांजू ॥ काम क्रोध मद लोभ सु कर २ पाप अनेक कमाये कि हांजू ॥ १ ॥ देव धर्मगुरु ग्रंथ न जानो करौ कहा जग आये कि हांजूं ॥ तीरथ व्रत अरु सन्त न माने जीव दया न सुहाये कि हांजू ॥ २ ॥ काम सर्प की लहर सतावे चेतन क्यों सुख पावे कि हांजू तृष्णा वश नित भ्रमत रहत है मन सन्तोष न आवे कि हांजू ॥ ३ ॥ आये कहां तें ? करत कहाहौ ? क्यों निज सुधि विसरावे कि हांजू ॥ मोह महा मदिरा के माते हित अनहित न दिखावे कि हांजू ॥ ४ ॥ पूजा करे न पुराण सुने कहुं पशुसम जन्म गमावे कि हांजू ॥ बाल तरुणपन ऐसहि खोवे विरधापन जब आवे कि हांजू ॥ ५ ॥ तनकौ जोर तनक नाहिं रहियौ नैनन नाहिं सुभावे कि हांजू ॥ सुने न कान बात नहिं बूझै बूढौ अब पछतावे कि हांजू ॥ ६ ॥ नारी पूत कही नाहिं माने परौ २ बिल्लावे कि हांजू ॥ रोग अनेक उदय जब आवें तब बहुविधि दुख पावे कि हांजू ॥ ७ ॥ मरती बिरियां सोच करत है कोऊ नाहिं बचावे कि हांजू ॥ दान पुण्य

कछु करत न बनहै इकर मुकर मुन्व जोवे कि हांजू ॥८॥ प्रभुको नाम कहावन लागे प्रकृति न छुटत छुटायें कि हांजू ॥ बये बमूल आम रस चाहे सो कैसे कर पावे कि हांजू ॥ ९ ॥ यही जान कछु चेतहु चेतन फिरना रहौं भुलाने कि हांजू ॥ रहनी नगर बसें सब श्रावक शास्त्र पुराण जु माने कि हांजू ॥ १० ॥ संवत् अठारासें शुभ बीते पैंतिस ऊपर कीजे कि हांजू ॥ कहै जमकरन शरण प्रभु तेरे मोको निर्भय कीजे कि हांजू ॥ ११ ॥

(७)

("बधाई" जन्मके समयकी)

कांहै घर २ मँगलाचार जन्मन प्रगटाये ॥ टेक ॥ कांहै आदि जिनेश्वर अजितनाथ जिनस्वामीजी, अभिनन्दन नाथ दयाल जन्मन प्रगटाये ॥ १ ॥ कांहै सुमति अनन्त जिनेश्वरौ जिनस्वामी जी, कांहै नमौं अजुध्याआदि जन्मन प्रगटाये ॥ २ ॥ कांहै संभव श्रावस्ती पुरी जिन· स्वामीजी, कोसंभि पद्म जिनराय जन्मन प्रगटाये ॥ ३ ॥ कांहै बानरसी नगरी विषै जिनस्वामीजी, श्रीपार्श्व सुपारस देव जन्मन प्रगटाये ॥ ४ ॥ कांहै चन्द्रपुरी चन्द्रप्रभु जिनस्वामीजी, हरिपुर श्रेयांस जिनेश जन्मन प्रगटाये ॥ ५ ॥ कांहै वासपूज्य चंपापुरी जिनस्वामीजी, काकंदी सुमति जिनेश जन्मन प्रगटाये ॥ ६ ॥ कांहै

शीतल भद्दलपुर विषैं जिनस्वामीजी, कंपिल्ला विमल जिनेश जन्मन प्रगटाये ॥ ७ ॥ काँई रत्नपुरी वृषनाथजी जिन स्वामीजी, त्रय हस्तनागपुर जान जन्मन प्रगटाये ॥ ८ ॥ काँई मल्लिनाथ नमिनाथजी जिनस्वामीजी मिथिलापुर नमत सुरेश जन्मन प्रगटाये ॥ ९ ॥ काँई सुव्रत राजग्रही विषैं जिनस्वामीजी, काँई द्वारावति नेम जिनेश जन्मन प्रगटाये ॥ १० ॥ काँई कुंडनपुर महावीरजी जिन स्वामीजी, काँई वन्दौं जिन चौबीस जन्मन प्रगटाये ॥११॥ काँई जब श्रावक ग्रह पुत्र ह्वै जिनस्वामीजी, तब करौ बधावौ येहु जन्मन प्रगटाये ॥ १२ ॥ काँई खोटे गीत छुड़ायके जिनस्वामीजी, भवि पढिये मन वच काय जन्मन प्रगटाये ॥ १३ ॥ काँई पुत्र सुलक्षण ऊपजे भवि प्राणी हो, निज तात मात सुखदाय जन्मन प्रगटाये ॥ १४ ॥ काँई अनुक्रम पंडित पद लहै भवि प्राणीहो, काँई भोगै भोग विलास जन्मन प्रगटाये ॥ १५ ॥ काँई पीछे शिवमारग लहै जिनस्वामी हो, काँई सर्व दुःख क्षय जाय जन्मन प्रगटाये ॥ १६ ॥ काँई हम तुम को सब जीवन को जिनस्वामीजी, काँई गिरवर होउ सुखदाय जन्मन प्रगटाये ॥ १७ ॥

(८)

("वधाई" जन्मके समयकी)

काँई घर २ मँगलाचार सन्मति प्रगटाये ॥ टेक ॥ काँई सिद्धारथ प्रियकारिणी जिनस्वामीजी ॥ काँई कुंड-नपूरमें आय सन्मति जन्मेजी ॥ १ ॥ काँई व्याघ्र चिन्ह चरणन लसै जिनस्वामीजी ॥ काँई तपते सुवरन काय सन्मति जन्मेजी ॥ २ ॥ काँई वर्ष बहत्तर आयुधर जिन-स्वामीजी ॥ काँई ऊंचे हाथजु सात सन्मति जन्मेजी ॥ ३ ॥ काँई पुष्पोत्तरतें आइयौ जिनस्वामीजी ॥ काँई तीन ज्ञान सुखकार सन्मति जन्मेजी ॥ ४ ॥ काँई छट अषाढ सुदि जन्म लियौ जिनस्वामीजी ॥ सुदि चैत्र तेरसी जन्म सन्मति जन्मेजी ॥५॥ काँई मागवदी दश तप धरौ जिनस्वामीजी ॥ काँई वैशाख वदी छट ज्ञान सन्मति जन्मेजी ॥ ६ ॥ काँई कार्तिक श्याम अमावसिया जिनस्वामीजी ॥ काँई गये अचल शिव धाम सन्मति जन्मेजी ॥ ७ ॥ काँई धर्मवृष्टि तुमने करी जिनस्वामीजी ॥ काँई जिनमारग दियौ बताय सन्मति जन्मेजी ॥ ८ ॥ काँई भव्य कमल प्रतिबोधियां जिन-स्वामीजी ॥ काँई उपल नहीं विकसाय सन्मति जन्मेजी ॥ ९ ॥ काँई अरन ज्ञानमें तप धरौ जिनस्वामीजी ॥ काँई एक सहस नृप साथ सन्मति जन्मेजी ॥ १० ॥

काँई नदी बड़ाहर तीरपै जिन स्वामीजी ॥ काँई प्रगटौ केवल ज्ञान सन्मति जन्मेजी ॥ ११ ॥ काँई पावापुर सरवर विषैं जिन स्वामीजी ॥ काँई पहुंचे शिवपुर धाम सन्मति जन्मेजी ॥१२॥ काँई मम अरजी चित धारियौ जिनस्वामीजी ॥ प्रभु वेग करहु भवपार सन्मति जन्मेजी ॥ १३ ॥ काँई लघु वुधि गिरवरदास हैं जिनस्वामीजी ॥ काँई दीजे चरणन साथ सन्मति जन्मेजी ॥ १४ ॥

(९)

("बुंदेला" जन्मके समयका)

समेला काना हो जइया रावजू ॥ टेक ॥ दोहा दीगाना करो हो भइया नाहिं भरौ मदवाल ॥ १ ॥ जब तो विपत पराइया हो भाई तब सुमरौ जिनदेव ॥ २ ॥ बध बंधन सब छूटहीं हो परमातम पद ध्याय ॥ ३ ॥ अधिकी भीर भराभरी हो जिया आदि जिनन्द सुमिराय ॥ ४ ॥ तबहुं निसारा हुऔ हो चेतन धर सन्यास विचार ॥ ५ ॥ नगर चँदेरी बानियां हो गिरवर न्हारे वाल ॥ समेला काना हो ॥ ६ ॥

(१०)

(" बधाई" जन्मके समयकी)

ऊंचौ सौ नगर सुहावनौ प्रभु झांझरिया ॥ जहँ समुदविजयजीकौ राज सुमति प्रभु झांझरिया ॥ १ ॥

आले २ चन्दन कटाये कें ये प्रभु झांझरिया ॥ अच्छी
ओंर पलकियां गढ़ाव सुमति प्रभु झांझरिया ॥ २ ॥
अच्छी मिंचचन भँवर सुंआव कि ये प्रभु झांझरिया ॥
अच्छी बुनियत रेशम पाट सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ३ ॥
अड़वायन दई मखतूल कि ये प्रभु झांझरिया ॥ घरी
अलम शाही गेंडुवा सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ४ ॥ नावै
पौढ़ीं शिव देवी माय कि ये प्रभु झांझरिया ॥ जन्मे
श्रीनेमकुमार सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ५ ॥ काहेके
ओलक बांधियो ये प्रभु झांझरिया ॥ अच्छे गजोंके
ओलक बांधे सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ६ ॥ अक काहेके
बंधनवार तो ये प्रभु झांझरिया ॥ आछे फूलोंके बंधन-
वार सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ७ ॥ काहेके छुरा नरा
चीरियो ये प्रभु झांझरिया ॥ सौनेके छुरा नरा चीरियो
ये प्रभु झांझरिया ॥ ८ ॥ सो तौ काहेके खप्पर न्हान
तो ये प्रभु झांझरिया ॥ आछे रूपेके खप्पर न्हान
सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ९ ॥ डरहीके रूप सँजोइयां
ये प्रभु झांझरिया ॥ अक मुतियोंके अजन टाल सुमति
प्रभु झांझरिया ॥ १० ॥ सो तौ घर २ कुँडवारो भर-
गयौ ये प्रभु झांझरिया ॥ सो तौ डलियोंमें भरगई दूब
सुमति प्रभु झांझरिया ॥ ११ ॥ सो तौ घर घर गावैं
गोरनी ये प्रभु झांझरिया ॥ सो तौ मंगल गीत अपार

सुमति प्रभु झांझरिया ॥ १२ ॥ काहेकी बांटी तिल-
चांवड़ी ये प्रभु झांझरिया ॥ सो तो हीरन बांटी तिल-
चांवरी ये प्रभु झांझरिया ॥ १३ ॥ अरु मुहरन बँटी है
तमोर सुमति प्रभु झांझरिया ॥ कैसे नखत प्रभु जन्मये
ये प्रभु झांझरिया ॥ १४ ॥ भले हो नखत प्रभु जन्मये
ये प्रभु झांझरिया ॥ गिरनारीकौ करैं वे राज सुमति
प्रभु झांझरिया ॥ १५ ॥ गिरवर धन प्रभु जन्मियौ ये
प्रभु झांझरिया ॥ मोहि देहु शिव पुरको राज सुमति
प्रभु झांझरिया ॥ १६ ॥

(११)

("हांहां वे कि हूंहूंवे" की चाल-ब्याहमें)

देव जिनेश्वर रूप पिछानों तिनके गुण बतलाऊं वे ॥
हांहां वे कि हूंहूंवे ॥ टेक ॥ चार घातिया कर्म नाशके
ज्ञेय सकल दरशाऊं वे ॥ केवल ज्ञान लहौ जब जिनजी
लोकालोक लखाऊं वे ॥ १ ॥ जिनकें प्रातिहार्य वसु
सोहत चार चतुष्टय गाऊं वे ॥ अतिशय युत चौंतीस
विराजत तिनके भेद बताऊं बे ॥ २ ॥ दस जन्मत दश
ज्ञान सुरन कृत चौदह मनमें भाऊं वे ॥ ऐसे गुण छ्या-
लिस संपूरण तिनकों भाऊं चाँऊं वे ॥ ३ ॥ पुनि सर्वज्ञ
परम उपदेशी वीतराग पद पाऊं वे ॥ इस विधि देव
जिनेश्वर पदको वार २ शिर नाऊं वे ॥ ४ ॥ देव शास्त्र

गुरु निशदिन बन्दौं भव २ प्रेम लगाऊं ये ॥ दिन २ जिन पद नमौं भावसूं फेर न भव भरमाऊं ये ॥ ५ ॥ अब के नर तन पाय अमोलक बहुविधि भक्ति बढाऊं ये ॥ फिर नर तन मिलनौ नहिं गिरवर जो शिव पंथ न पाऊं ये ॥६॥

(१२)

("हांहां वे हूंहूं वे" की चाल-ख्याहमें)

मेरी री अलबेलो मनुआं यो शिव मारग धावे ये ॥ हांहां ये कि हूंहूं वे ॥ टेक ॥ जुआ, मांस, मद, चोरी, वेश्या, खेट नारि पर जावे ये ॥ सात विसन इनके वश परिकैं सातों नर्क लहावे ये ॥ १ ॥ छत्तिसभाव धरे पुनि जो सो गति निगोद की जावे ये ॥ सात भाव धारे पुनि प्राणी ज्ञानावर्ण उपावे ये ॥ २ ॥ पंच चतुर द्वादश पुनि दो घर भव २ गोता खावे ये ॥ अपने तन पोषन के कारण पर जिउ घात कराबे ये ॥३॥ खेद न जाने भेद न जाने नाहक भरम भुलावे ये ॥ रागद्वेष मद मोह छोह तजि सम्यक् ज्ञान लहावे ये ॥ ४ ॥ विषय कषाय पाप मिथ्या तजि निज ध्यावे शिव पावे ये ॥ सुक्ख अनन्त विलसै अविनाशी गिरवर दास कहावे ये ॥ ५ ॥

(१३)

("हांहां वे हूंहूं वे" की चाल, ख्यालमें)

मेरीरी अलबेलो मनुआं यो शिव मारग धावे ये ॥

हांहां वे कि हूंहूं वे ॥ टेक ॥ अष्ट कर्म की फौजें आई ज्ञान खड़ग लै धावे वे ॥ पंच महाव्रत, पांचौं समिती तीनों गुप्ति निभावै वे ॥ १ ॥ दुर्धर तप व्रत बारह माड़ै करम की धूल उड़ावे वे ॥ बाइस परीषह आपुन माड़ै क्षमा की ढाल बनावे वे ॥ २ ॥ पंच परावर्तन को चूरै लोक शिखरको धावे वे ॥ छिंगनी छगन ललितपुर लल्ले कारीकमल बसावे वे ॥ ३ ॥ देवीदास गुपाल दिगोड़े जिनमत गारी गावे वे ॥ हीन बुद्धि अरु कवि लघुताई बुधजन शोध मिलावे वे ॥ ४ ॥

(१४)

("हांहां वे हूंहूं वे" की चाल-व्याहुमें)

अब की वेलाँ अवसर पायौ फेर न यौ भव पावे वे, हांहां वे कि हूंहूं वे ॥ टेक ॥ वसौ अनादि निगोद मांहि तूं बहुविधि दुख भुगतावे वे ॥ तहाँ तें निकसन बहुत कठिन है तालीकाक समावे वे ॥ १ ॥ एक श्वासमें अठदश वारी जामन मरण लहावे वे ॥ छयासठ सहस तीनसौ छत्तिस अन्तरमुहूर्त धरावे वे ॥ २ ॥ एक प्रदेश अनन्त भाग की सूक्ष्म देह कहावे वे ॥ इक अक्षर के भाग बराबर तब तूं ज्ञान लहावे वे ॥ ३ ॥ खंधरु पुलवी देह जीव आवास पंच भरमावे वे ॥ इक इकमें हैं जीव अनन्ते जन्म मरण दुख पावे वे ॥ ४ ॥ यों निगोद दुख

थोड़ो बरतो बहुतक ग्रंथ बढ़ावे बे ॥ मायाचार, कुशील झूठ युत ऐसी गति को जावे बे ॥ ५ ॥ विकथा पाप व्यसन मिथ्यादृग सों निगोद घर धावे बे ॥ तातें बार २ समझाऊं मति कुदेव को ध्यावे बे ॥ ६ ॥ यौ तन पाय धरम कछु करले नाहक जन्म गमावे बे ॥ जाग सके तो जागले चेतन फिर पीछे पछतावे बे ॥ ७ ॥ आनँद घन सर्वज्ञ जिनेश्वर चरण कमल को ध्यावे बे ॥ सब जीवन से क्षमा करीजे गिरधर दास जनावे बे ॥ ८ ॥

(१५)

("बोल मेरे भाई" की चाल-विवाहमें)

सुरग लोक में जुरी अथाई, कि बोल मेरे भाई ॥टेक॥ सेठ सुदर्शन सूली पाई, कि बोल मेरे भाई ॥ भयौ विमान सुरग सुखदाई, कि बोल मेरे भाई ॥ १ ॥ सीता सती अगनि पर धाई, कि बोल मेरे भाई ॥ देवन धनि २ कीन्हीं आई, कि बोल मेरे भाई ॥ २ ॥ तस्कर अंजन मंत्र जपाई, कि बोल मेरे भाई ॥ सुरग जाय बहुत रिधि पाई, कि बोल मेरे भाई ॥ ३ ॥ श्रीपाल कोटीध्वज राई, कि बोल मेरे भाई ॥ धर्म तनें नव निधि तिन पाई, कि बोल मेरे भाई ॥ ४ ॥ रविदत्त चोर ऋषी धरवाई, कि बोल मेरे भाई ॥ णमोकार तें सुरपद पाई, कि बोल मेरे भाई ॥५॥ वेगवती रूपधारी नारी, कि बोल मेरे भाई ॥

ता प्रसाद सुख पायौ भारी, कि वोल मोरे भाई ॥ ६ ॥ धर्म तनैं फल अगम अपारी, कि वोल मोरे भाई ॥ गिर-वरदास हिये विच धारी कि वोल मोरे भाई ॥ ७ ॥

(१६)

("छोड मोरे भाई" की चाल-व्याहमें)

सात व्यसन की लगी अथाई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ तिन की कथा सुनहु चितलाई, कि वोल मोरे भाई ॥ टेक ॥ जुआं खेल पांडव दुख पाई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ पल भखि के वक नरकै जाई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ १ ॥ मदिरा पी यदुवंश नशाई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ चारुदत्त वेश्या भटकाई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ २ ॥ खेट ब्रह्मदत्त नृप पछताई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ दशमुखने परनारि चुराई, कि छोड़ मोरे भाई ॥ ३ ॥ कीचकने व्यभिचार कराई, कि छोड़ मेरे भाई ॥ इक २ सेवत वहु दुख पाई, कि छोड़ मेरे भाई ॥ ४ ॥ सातों सेवत का फल पाई, कि छोड़ मेरे भाई ॥ गिरवर दास चँदेरी में गाई, कि छोड़ मेरे भाई ॥ ५ ॥

(१७)

("छोड मेरे भाई" की चाल-व्याहमें)

सुमति कुमति कि लगी लडाई कि छोड़ मेरे भाई ॥ टेक ॥ मांस खाय नर नरकै जाई कि छोड़ मेरे भाई ॥

मदिरा खाय ताको कुटुम नसाई कि छोड़ मेरे भाई ॥ ॥१॥ कुमति नारि को त्याग कराई कि छोड़ मेरे भाई ॥ कुमति नारि कुकरम करवाई कि छोड़ मेरे भाई ॥ २ ॥ मोहराय की बेटी जाई कि छोड़ मेरे भाई ॥ सुमती देय सुगति दुखदाई कि छोड़ मेरे भाई ॥ ३ ॥ देवीदास सुमति मन भाई कि गहु मेरे भाई ॥ कुलटा कुमति देह छिड़काई, कि छोड़ मेरे भाई ॥ ४ ॥

(१८)

("साजाना" की चाल-विवाहमें)

मोकों अति सुन्दर मिजमानी लाये जिनवर साजाना ॥ टेक ॥ शील चुनरिया सुरँग रँगीली सारी उर फूला ॥ १ ॥ पांच अनोव्रत चोली पांचों जरनारी वरना ॥२॥ चौ शिक्षाव्रत वेसर लाये मोतिन के झुलना ॥ ३ ॥ सम्यक दर्शन गजरा लाये रतना झलकाना ॥ ४ ॥ ज्ञान चरित दोई हार ल्याये झलके सो घदना ॥ ५॥ कर्णफूल कानन को लाये सोहैं जिन वचना ॥ ६ ॥ दश लक्षणके कंकण लाये चँड़ियोमें भरना ॥७॥ सुमति हार कजरौटी लाये झंझरी के भरना ॥ ८ ॥ सब मिजमानी पहिर सजन की गिरनारी जाना ॥ ९ ॥ जिन सजनाके चरण-कमल भज भवसागर तरना ॥ १० ॥

(१९)

(" हमारे रामाना " की चाल-विवाहमें)

पांच वचनये मानियौ मोरे रामाना ॥ तुम राखौ हिरदे बीच हमारे रामाना ॥ टेक ॥ सात व्यसन तुम छोड़ियौ मोरे रामाना ॥ अरु आठई मद तज देव हमारे रामाना ॥ १ ॥ पंच अनुव्रत पालियौ मोरे रामाना॥ कछु ब्योरा देहुं बताय हमारे रामाना ॥२ ॥ जिय हिंसा तज दीजिये मोरे रामाना ॥ पुनि कर चोरीकौ त्याग हमारे रामाना ॥ ३ ॥ झूठ वचन नहिं बोलिये मोरे रामाना ॥ यौ परिग्रह दुख कौ मूल हमारे रामाना ॥४॥ यह शील रतन नित पालिये मोरे रामाना ॥ जो भव २ में सुख-दाय हमारे रामाना ॥ ५ ॥ रात रसोई ना करौ मोरे रामाना ॥ पुनि अनगल पियौ न नीर हमारे रामाना ॥ ॥ ६ ॥ निशिभोजन ना कीजिये मोरे रामाना ॥ ये है हिंसा कौ मूल हमारे रामाना ॥ ७ ॥ देव एक अर्हंत हैं मोरे रामाना ॥ अरु हैं सब देव कुदेव हमारे रामाना ॥ ॥ ८ ॥ पूजा जिन की कीजिये मोरे रामाना ॥ वो स्वर्ग मुक्ति सुख देत हमारे रामाना ॥९॥ भंड गीत ना गाइये मोरे रामाना ॥ नित सुनिये कथा पुराण हमारे रामाना ॥ १० ॥ ये दुर्लभ नर भव पाइयौ मोरे रामाना ॥ जो चूकपरै नहिं दाव हमारे रामाना ॥ ११॥ धर्म दया चित

राखियौ मोरे रामाना ॥ ये है सतगुरुकी सीख हमारे रामाना ॥१२॥ यह दयाचंद नित गाइये मोरे रामाना ॥ ये गारी सब हितकार हमारे रामाना ॥ १३ ॥

(२०)

(" हमारे रामाना " की चाल-ख्याहमें)

धरम तला की पाराना, मोरे रामाना,सतगुरु सपरन जाँय हमारे रामाना ॥ टेक ॥ ऐसी कुमति कहां पाइयौ मोरे रामाना ॥ दुर्गति को लेजाय हमारे रामाना ॥ १ ॥ काहे कुमति दारी थारिहैं मोरे रामाना ॥ तोहि सत-गुरु दई निकराय हमारे रामाना ॥ २ ॥ जा नर देही पा-इयौ मोरे रामाना ॥ श्रावक कुल अवतार हमारे रामाना ॥ ३ ॥ कुमति को धरदई पाराना मोरे रामाना॥ सुमति सखी लई साथ हमारे रामाना ॥ ४ ॥ देवी दास जु गाइयौ मोरे रामाना ॥ भाई दे जिनमत उपदेश हमारे रामाना ॥ ५ ॥

(२१)

(" हमारे नामाना" की चाल-ख्याहमें)

ऐसे चेतन मग भूलियौ मोरे नामाना ॥ टेक ॥ जिन मारगमें कांटे बये मोरे नामाना ॥ तिस मारग दिग मत जाय हमारे नामाना ॥ १ ॥ सो मारग काना कहाँ मोरे नामाना ॥ तिहि मारग भेद बताय हमारे नामाना ॥

॥ २ ॥ मारग खोटा कुशीलिया मोरे नामाना ॥ सो तिस पथ भूल न जाय हमारे नामाना ॥३॥ चोरी अति खोटी कही मोरे नामाना ॥ हिंसा पुनि झूठी साख हमारे नामाना ॥ ४ ॥ सल्ल दल्ल परमेल्लिया मोरे नामाना ॥ जूवादिक व्यसन तजाहु हमारे नामाना ॥ ५ ॥ ढुंढक डील दुखावनौ मोरे नामाना ॥ नर्क वसे बहु काल हमारे नामाना ॥ ६ ॥ खटमल षट्पद चींटिया मोरे नामाना ॥ मख मच्छर टीड़ी पतंग हमारे नामाना ॥ ७ ॥ अहि बीछू पुनि चूहड़ा मोरे नामाना ॥ अरु कीड़ी भेक मराल हमारे नामाना ॥ ८ ॥ छाग नाग कनकेवड़ा मोरे नामाना ॥ वो तो मिरग सिंह इत्यादि हमारे नामाना ॥ ९ ॥ इन जीवनको जो मारही मोरे नामाना ॥ तिनकी गति कहा होय हमारे नामाना ॥ १० ॥ और सबै दुरपंथिया मोरे नामाना ॥ है इकसांचौ जिनधर्म हमारे नामाना ॥ ॥११॥ ये बातें जिनमत कहीं मोरे नामाना ॥ ते सुनलो गिरधर दास हमारे नामाना ॥ १२ ॥

(२२)

("हमारे रामाना की चाल" व्याहमें)

धरम तला के पाराना, मोरे रामाना ॥ सतगुरु सपरन जाय हमारे रामाना ॥ टेक ॥ सुघर चेतन बहु पनियां भरन गईं निजगुण छमकत पैजाना, मोरे रामाना ॥

॥ १ ॥ तला किनारे दृष्टि पसारी मिलगये सतगुरु याराना, मोरे रामाना ॥ २॥ सुघर चेतन बहु सुमती दारी सुनि चरणन चित धाराना, मोरे रामाना ॥ ३ ॥ दोइ मिल रमत रहैं निज मन्दिर अपनौ रूप विचाराना, मोरे रामाना ॥ ४ ॥ गिरवर दास शील व्रतपालें पहुंचें भवदधि पाराना, मोरे रामाना ॥ ५ ॥

(२३)

("मैंने हटकी थी मैंने वरजीथी" की चाल-ब्याहमें)

मैंने हटकी थी मैंने वरजी थी तुमतौ कर्म की संगति नाहिं तजी ॥ टेक ॥ जब जे कर्म उदय है आये, तिन की सुधि बुधि सर्व भुलाये मैंने हटकी थी-॥ १ ॥ साता असाता उदय होय आये, मिश्रित कर्म रहौ तहां छाये मैंने हटकी थी-॥ २ ॥ राग द्वेष की क्या थिति होय, इनकी थिति नर्कन तक होय मैंने हटकी थी-॥ ३ ॥ होव सुखी इनको देव छोड़, विषय कषायन तें मुख मोड़ मैंने हटकी थी-॥ ४ ॥ कहैं देवीदास सुनौ हो गुपाल, जिनमत गारी है गुनपाल मैंने हटकी थी ॥ ५ ॥

(२४)

("सुनत हौ" की चाल-ब्याहमें)

हो चेतन गुणराय सुनत हौ, हो चेतन गुणराय॥टेक॥ काल अनन्त निगोद गमायौ इकइन्द्री तन पाय, सुनत

हौ ॥ लख चौरासी योनिमें भटके बहुत धरे तन जाय, सुनत हौ ॥ १ ॥ गर्भ निवास सहे दुख भारी सो तूँ सब विसराय, सुनत हौ ॥ बालापन ख्यालनमें खोयौ तरुणपने त्रिय भाय, सुनत हो ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुवृष नित सेयौ, कीन्ही तीव्र कषाय, सुनत हौ ॥ जब दुख पावे तब जिन ध्यावे सुखमें सुधि विसराय, सुनत हौ ॥ ३ ॥ मूलचन्द विनवै सुन चेतन जिनवर नाम सहाय, सुनत हौ ॥ निशदिन भजन करौ प्रभुजीका पावौ शिवसुख दाय, सुनत हौ ॥ ४ ॥

(२५)

(" सुनत हौ " की चाल, व्याहमें)

जगते भगते सोइयौ चेतन राय, आवै कुमति कुनारि सुनत हौ आवै कुमति कुनारि ॥ टेक ॥ सुमति सुनारी अरज करत है लेव चेतन चित धार, सुनत हौ ॥ १ ॥ बा दारी पूरी फरफन्दन तुम पर डारै जार, सुनत हौ ॥ ॥२॥ दुखिया करे अनादि काल तें मोह की पाँस पसार सुनत हो ॥ ३ ॥ वाके प्रेम भूल रहे आपा भरमत हौ गति चार, सुनत हौ ॥ ४ ॥ जो सुख चहौ तजौ वाकौ सँग क्यों सेवौ व्यभिचार, सुनत हौ ॥ ५ ॥ निजानन्द निजरस में पागौ लेहु सुमति हिय धार, सुनत हौ ॥६॥

गिरवर दास कुमति कुलटा तज सुमति प्यारी नारि, सुनत हौ ॥ ७ ॥

(२६)

(" सुनतहौं " की चाल व्याहमें)

जगते भगते सोइयौ चेतन राय तुम पर आवे जग-जाल, सुनत हौ ॥ टेक ॥ मोह नींद तोहि देय असाता भव २ भ्रम जंजाल, सुनत हौ ॥ १ ॥ वालपने में ज्ञान लहौ ना चाले कौतुक चाल, सुनत हौ ॥ २ ॥ वहुरि जवान कमाऊ होकर तिरियन में मतवाल, सुनत हौ ॥३॥ विरध भये तव भये तृष्णावश इमि तिहुंपनका ख्याल सुनत हौ ॥४॥ पावक जरें कूप कौ खनवौ सो निष्फल वा काल, सुनत हौ ॥ ५ ॥ तातैं चेतन सुरत सम्हारौ नातर कौन हवाल, सुनत हौ ॥ ६ ॥ परनारी कौ संग छाँड़ दो पहिरौ शील सुमाल, सुनत हौ ॥ ७ ॥ सकल वरात व्याह जुड़के तुम वांधत कर्म विहाल, सुनत हौ ॥ ८ ॥ नाच, तमाशा, हांस, विकथा वहु करत फाग विकराल, सुनत हौ ॥ ९ ॥ रैन दिवस खिलखिल कल्मष करि डोलत लाल गुलाल, सुनत हौ ॥ १० ॥ ऐसौ नर तन पाय वावरे क्यों न भजै गुणमाल, सुनत हौ ॥११॥ नर तन पाय धर्म करलेओ अवसर मिलौ सुचाल, सुनत

हौ ॥ १२ ॥ सकल गुणन कर पूरन जिनवर नमलै गिर-
वर भाल, सुनत हौ ॥ १३ ॥

(२७)

(" सुनतहौ " की चाल. विवाहमें)

जगते भगते सोइयौ चेतन राय करम फन्द निनुवा·
रौ, सुनत हौ ॥ टेक ॥ पंच उदंवर तीन मकार पुनि सात
व्यसन परिहारौ, सुनत हौ ॥ १ ॥ सप्त तत्व अरु नौई
पदारथ वारा तप व्रत धारौ, सुनत हौ ॥ २ ॥ कठिन २
कर नर भव पाई जप तप धर्म प्रचारौ, सुनत हौ ॥ ३ ॥
देवीदास की लघु कविताई जिनमत बात विचारौ,
सुनत हौ ॥ ४ ॥

(२८)

(" नौवद पै डंका लागोहो " की चाल-विवाहमें)

नौवद पै डंका लागौ हो, नौवद पै डंका ॥ टेक ॥ दोय
घड़ी जब रात गई है तब सब कारज त्यागौ हो ॥ १ ॥
बालक, जठर, युवा, नरनारी जिन मन्दिर को भागौ हो
॥ २ ॥ कर पग धोय अमल जल सेती वन्दन मन अनु-
रागौ हो ॥३॥ गद्य पद्य युति कर जिन आगे नाय माथ
क्षिति लागौ हो ॥ ४ ॥ कर सम्पुट युग जप नवकारै
शब्द अर्थ मन पागौ हो ॥५॥ करत आरती धरत हरष
उर मोह तिमिर सब भागौ हो ॥ ६ ॥ फिर सुनिये जिन

बैन सुधामृत परम प्रीति उर जागौ हो ॥ ७॥ चार योग चारों सुकथा सुनि सकल भरम तम भागौ हो ॥ ८ ॥ विनय सकल धरि करत प्रश्न सो तातें चिध पट दागौ हो ॥ ९ ॥ विनयवान के ज्ञान उपन्नत तातें विनय प्रवागौ हो ॥ १० ॥ विषय कषाय दोष दुख दूषण सुनत बैन सब त्यागौ हो ॥ ११ ॥ पुनि सन्तोष धार पद कहिये उर समता रस जागौ हो ॥ १२ ॥ बदली दास तनुज गिरवर हम गावें राग सुभागौ हो, नौबद पै डंका लागौ हो ॥ १३ ॥

(२९)

("रहमदिला" विवाहमें)

हांहां जी काशी के वासी रहम दिला ॥ टेक ॥ मात-गर्भ में हुए जब वासी, रहम दिला ॥ सोलह सपने भये सुख भासी रहम दिला ॥ १ ॥ उन स्वपनन फल पिता कहासी, रहम दिला ॥ सुन माता पाई सुख राशी, रहम दिला ॥ २ ॥ दशवें मास प्रगट दिखलासी, रहम दिला ॥ पैदा भये प्रभु ता दिन काशी, रहम दिला ॥३॥ सब घर २ आनन्द मनासी, रहम दिला ॥ मात सेव देवी करें खासी, रहम दिला ॥ ४ ॥ मन प्रसन्न जिनमात रहासी, रहम दिला ॥ बहुत तमाशे देव करासी, रहम दिला ॥ ॥ ५ ॥ पारशनाथ नाम दुखनाशी, रहम दिला ॥ धरौ

पिता पायौ सुख जासी, रहम दिला ॥ ६ ॥ नाग चिन्ह पद देव दिखासी, रहम दिला ॥ कान्ति श्याम रँग हरा दिखासी, रहम दिला ॥ ७ ॥ सप्त हाथ तन बाल उदासी, रहम दिला ॥ कारण पाय भये बनवासी, रहम-दिला ॥ ८ ॥ तप धरि कर्मों कीन्ही नाशी, रहम दिला ॥ केवलज्ञान भयौ भव नाशी, रहम दिला ॥ ९ ॥ भव्यन को शिवमार्ग बतासी, रहम दिला ॥ गये शिवपुर कर्मों को नाशी, रहम दिला ॥ १० ॥ नाथुराम ये विनय करासी, रहम दिला ॥ मुझे राख प्रभु चरणन पासी रहम दिला ॥ ११ ॥

(३०)

("बनरा" विवाहमें)

मोरौ शिवपुर जावन हारौ चेतन जग उजियारौ री॥ टेक ॥ मेरौ पंच महाव्रत धारी बनरा जगतें न्यारौ री ॥ १ ॥ मोरौ रत्नत्रय को धारी बनरा शिव त्रिय प्यारौ री ॥ २ ॥ मोरौ दश लक्षण कौ धारी बनरा सुमति सम्हारौ री ॥ ३ ॥ मोरौ सोलह कारन धारी बनरा जग उपकारौ री ॥ ४ ॥ मोरौ द्वादश तप कौ धारी बनरा कर्म प्रजारौ री ॥ ५ ॥ मोरौ सहे परीषह बाईस वौ तो शिव मग त्यारौ री ॥ ६ ॥ मोरौ राग द्वेष को त्यागी बनरा

गुण गरवारौ री ॥ ७ ॥ मोरौ शिव बनरी व्याहन को उमह्यो जिनमतवारौ री ॥ ८ ॥

(३१)

(" बनरा " विवाहमें)

ऐसौ सुन्दर बनरा थोतो बहुतै सुन्दर बनरा शिव दिव्या जीकौ ऐसौ सुन्दर बनरा सुदेखौरी सखी मोरौ ऐसौ सुन्दर बनरा॥ टेक ॥ घर नहिं चाहै बनरा कुटुंम ना चाहै बनरा सो गिरपर जावे को मचल रह्यौ बनरा ॥ १ ॥ बसतर ना चाहै बनरा भूषण ना चाहै बनरा सो तौ जीव दया कौं मचल रह्यौ बनरा ॥ २ ॥ मौर न चाहै बनरा बागौ न चाहै बनरा सो तप धरवे कौं मचल रह्यौ बनरा ॥ ३ ॥ व्याहु न चाहै बनरा चलाव न चाहै बनरा सो शिव बनरी को मचल रह्यौ बनरा ॥ ४ ॥ दिक्षा धर लई बनरा सु केवल पायौ बनरा सुभावि जीव तारवे को मचल रह्यौ बनरा ॥ ५ ॥ निर्वाण पधारौ बनरा नथमल को तारौ बनरा सु येही अरज तुमसे है मेरी बनरा॥६॥

(३२)

(" बनरा " विवाहमें)

चेतन सुनहु हवाल हाल ॥ व्याहु की जा उत्तम चाल ॥ टेक ॥ दश धर्मन कौं मौर सु बांधौ, सुमौर सौ बांधौ सुमौर सौ बांधौ जामें लगै अति सुन्दर भाल ॥

॥ १ ॥ दर्शन ज्ञानचारित्र की पगड़ी, चारित्रकी पगड़ी, चारित्रकी पगड़ी सुबांधेसे लगत है परम रसाल ॥ २ ॥ सुगुरु वचन सोई कानों में कुंडल, सोई कानों में कुंडल, सोई कानों में कुंडल सु पहिनौ जामें अति झलकत लाल ॥ ३ ॥ सोलह कारण को वागौ पहिनौ सुवागौ पहिनौ, सुवागौ पहिनौ सुजामें जीव दया नितपाल ॥ ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत रँगदार फेंटा, सुरँगदार फेंटा, सुरँ-गदार फेंटा, सुबाँध के कर्मों के काटहु जाल ॥ ५ ॥ प-च्चीस कषाय के मोजा पहिनौ, सुमोजा पहिनौ, सुमोजा पहिनौ सुशील को पायजामा सोहै विशाल ॥ ६ ॥ आठौं ही मद की पहिनौं पनहियां, सु पहिनौ पनहियां, सुपहिनौ पनहियां सुजामें वे अति होवैं कमाल ॥ ७ ॥ पात्र दान कर कंकन बांधौं सुकंकन बांधौ, सुजामें धर्म वढै तिहुँ काल ॥ ८ ॥ सो ऐसे हो चेतन वनके हो वन-रा सुवनकर हो वनरा, सुवनकर हो वनरा, सुध्यान कौ रथ तुम लेहु सँभाल ॥ ९ ॥ ताही रथ पर चढकर हो बनरा, चढ कर हो वनरा, चढकर हो वनरा सुज्ञान वरातीं सँग रखवाल ॥ १० ॥ ऐसे हो सजकर जाओ प्यारे बनरा, सु जाओ प्यारे वनरा, सु जाके कर्मोंकी अगौनी प्रजाल ॥ ११ ॥ जिनवर गुणके बाजे वजाओ, सुबाजे वजाओ, सुबाजे वजाओ सुपंच परमेष्ठी के गीत रसाल ॥ १२ ॥ ऐसे हो वनरा सुशिव रमनी सँग, सु-

शिव रमणी सँग, सुशिव रमणी संग पाड़ौ भांवर कट-जाय भ्रमजाल ॥ १३ ॥ शिव रमणी सँग सुक्ख निरन्त-र, सु सुक्ख निरन्तर, सु सुक्ख निरन्तर भोगौ जन्म मरण भय टाल ॥ १४ ॥ ब्याहु थखान के अरज करत हम, अरज करत हम, अरज करत हम, सो मेरे भो प्रभु भव दुख टाल ॥ १५ ॥ भूल पड़ी हो ठीक करो सुधि, ठीक करौ सुधि, ठीक करौ सुधि, अल्प बुद्धि कहै नथ-मल बाल ॥ १६ ॥

(३२)

("बनरा-विवाहमें)

मैं न अकेलौ जाऊं, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ छोडी कुमति सी नारि, सुमतिसे अड़रहौ बनरा ॥टेक॥ दया धरम इक माता बना की मोरे कहे से जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ १ ॥ सोलह कारण काकी बनाकी मोरी गरज से जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ २ ॥ दश लक्षण हैं पिता बनाके मोरी गरज से जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ ३ ॥ पंच महाव्रत काका बनाके मोरे कहेसे जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ ४ ॥ तीन रतन से भैया बनाके मोरे कहे से जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥ ५ ॥ द्वादश भावना बहिनें बना-की, मोरी गरज से जाव, सुमति विन अड़रहौ बनरा ॥

॥ ६ ॥ त्रेपन किरियां दाँजनी बनाकी मोरी गरज से जाव, सुमति बिन अड़रहौ बनरा ॥ ७ ॥ दयाचन्द प्रभु थारौ हों सेवक मोरी अटक सुलझाव, सुमति बिन अड़ रहौ बनरा ॥ ८ ॥

(३४)

(बनरा-विवाहमें)

"हियरेसे लगा लेती बनरे, जो चुनरीको छोड़"की चाल.

सुमति कहै सुन चेतन बनरे मानौ वचन अमोल ॥ सुख सांचौ बता देती बनरे, जो कुमती को छोड़ शिव रमनी मिला देती बनरे जो कुमती को छोड़ ॥ टेक ॥ केसरिया बागौ पहिरौ राजा बनरे शील कौ परम अमोल, सुख सांचौ बता देती बनरे-॥ १ ॥ माथे मौर धरौ राजा बनरे समकित परम अमोल सुख सांचौ बता देती बनरे-॥ २ ॥ हाथन कंकण पहिनौ राजा बनरे रत्नत्रय परम अमोल, सुख सांचौ बता देती बनरे-॥ ३ ॥ हिय कौ हार बनाव राजा बनरे द्वादश व्रत अनमोल, सुख सांचौ बता देती बनरे-॥ ४ ॥ कानन कुंडल अजब अनौखे गुरु के वचन अमोल, सुख सांचौ बता देती बनरे-॥ ५ ॥ ध्यान तुरंग सजौ राजा बनरे, समता गज अनमोल, सुख सांचौ बता देती बनरे जो कुमती को छोड़ ॥ ६ ॥ दयाचन्द शिव मग गहु बनरे जहँ है सुक्ख अतौल,सुख सांचौ बता देती बनरे जो कुमती को छोड़ ॥७॥

(३५)

(वनरा-विवाहमें)

"वनाके संग चलोंगीरे, अटरिया छोड चलूंगीरे"

वना स्यामलिया स्वामी जी, वना सबमें सिर नामी जी, वना मेरो जगसे न्यारो जी, वना सब हीको प्यारौ जी, वनाके संग चलूंगी जी, नेह सब तोड़ चलूंगी जी ॥ टेक ॥ वनाको जाय मनाऊं जी, चरणमें सीस नमाऊं जी, वना तौ जगत उदासी जी, वना की वनहीं दासी जी, वनाके संग चलूंगी जी, नेह सब तोड चलूंगी जी ॥ १ ॥ वना तो शरण सहाई जी, वनाकी कौन वड़ाई जी, वना निज रसमें डूबौ जी, सुमतिके द्वारें ऊभौ जी, वनाके संग-॥ २ ॥ वना निज नेम सँभारो जी, कुमति की सैन विडारो जी, सुमति की सेज पधारो जी, वना दस सखिन सिंगारौ जी, वनाके संग-॥ ३ ॥ वना धन भाग हमारौ जी, वना जी शरण तिहारौ जी, वना करुणाकर तारौ जी, दयाचँद दास विचारौ जी, वनाके संग-॥ ४ ॥

(३६)

(वनरा-विवाहमें)

मोरौ सब भैयन सिरदार वनाकौं क्या छवि लागीरे॥
स्वामी तीन लोक सरदार स्यामलिया नाथ कहावें जू,

॥ टेक ॥ स्वामी इन्द्रादिक सब देव सदा जिनके गुण गावैं जू ॥ स्वामि पै चौसठ ढुरते चौंर छत्र शिर तीन विराजें जू ॥ १ ॥ स्वामी सिंघासन छविदार कहा कवि उपमा गावैं जू ॥ स्वामी भामंडल पिछवार भानु द्युति कोट लजावैं जू ॥ २ ॥ स्वामी अंतरीक्ष भगवान आप कमलासन राजें जू ॥ स्वामी देव करें जयकार दुंदभी नाद बजावैं जू ॥ ३ ॥ स्वामी वाणी अमृतरूप सकल गणधर समझावैं जू ॥ स्वामी दोष अठारा रहित सहित छयालिस गुण राजें जू ॥ ४ ॥ स्वामी केवल रूप स्वरूप भाल शत इन्द्र नमावैं जू ॥ स्वामी अतिशय हैं चौंतीस कौन हम उपमा गावैं जू ॥ ५ ॥ स्वामी वर्णन अपरम्पार पार गणधर नहिं पावैं जू ॥ स्वामी दयाचन्द कर-जोर चरण को सीस नमावैं जू ॥ सोरौ सब भईयन सिरदार—॥ ६ ॥

(३७)

("वनरा" विवाहमें)

व्याहन मुकति पुर धाये, चेतन वनरा वन आये ॥ टेक ॥ माथें हो दिक्षा धारी जी चेतन, मन वच योग लगाये ॥ १ ॥ कानन जिनवानी सुन चेतन जा में ज्ञान समाये ॥ २ ॥ गले पहिन जिन नामकी माला, भव दधि पार लगाये ॥ ३ ॥ हिरदेमें सुमिरें पंच परम गुरु नासा-

दृष्टि लगाये ॥ ४ ॥ शिव बनरी व्याहन को उमहे, ज्ञान अनन्त लहाये ॥ ५ ॥ गिरवर दास व्याहु यो उत्तम जगतैं पार लगाये ॥ ६ ॥

(३८)

("वड़े गरजी" की चाल-विवाह फागमें)

वे तौ चेतन खेलत फाग हमारे वड़े गरजी ॥ टेक ॥ वे तौ आतम रस सम्यक गुण गारे, वड़े गरजी ॥ वे तौ ज्ञान गुलाल गंगजल डारें, वड़े गरजी ॥ १ ॥ वे तौ शील पिचक्र ले दाव निहारें, वड़े गरजी ॥ वे तौ भरि २ सुमति नारि पर डारें, वड़े गरजी ॥ २ ॥ वे तौ सुमति सैन करि कुमति विडारें, वड़े गरजी ॥ वे तौ निजानन्द थिरता रस धारें, वड़े गरजी ॥ ३ ॥ वे तौ वारह भावन सुभट सम्हारें, वड़े गरजी ॥ तहां बाजें त्रयोदश चंग नगारे, वडे गरजी ॥ ४ ॥ वे तौ सोलह कारण भावत प्यारे, वड़े गरजी ॥ वे तौ बुध गिरवर यह सीख सुना रे, वड़े गरजी ॥ ५ ॥

(३९)

("भौंरारे" की चाल-विवाहमें)

भ्रमत २ बहु काल गमायौ सुन भौंरारे ॥ काल अनन्त निगोद बसायौ सुन भौंरारे ॥ टेक ॥ तिन की कथा कहै को गाई, चेतौ चेतन राई सुन भौंरारे ॥ १ ॥

ये तूँतौ ज्ञान ध्यान पूजा तप करलै, षट् आवश्य सुमिर लै सुन भौंरारे ॥ २ ॥ ये तूंतौ पंच पाप मन वच तन तजदै, देव धरम गुरु भजलै सुन भौंरारे ॥ ३ ॥ ये तूंतौ अपने पदको सुमिरण करलै, पर पद भूल विसर दै सुन भौंरारे ॥ ४ ॥ ये तूतौं शील विरत धारौ हरषाई, तजहु सकल कुटिलाई सुन भौंरारे ॥ ५ ॥ ये तूं तौ धर्म धुरन्धर धार परम उर गिरवर भज वर पाई सुन भौंरारे ॥ ६ ॥

(४०)

("भौंरारे" की चाल-विवाहमें)

ऐसी उत्तम कुलको पायौ, सो तें वृथा गमायौ सुन भौंरारे ॥ टेक ॥ अब के तूं श्रावक तन पायौ, रत्नत्रय उर भायौ सुन भौंरारे ॥ १ ॥ देव धरम गुरु नहीं लखायौ, स्वपर भेद नहिं पायौ सुन भौंरारे ॥ २ ॥ मुनि श्रावककौ भेद न चीन्हों, जिनपद चित्त नहिं दीन्हों सुन भौंरारे ॥ ३ ॥ रत्नत्रय दश धर्म न जानों विषय कषाय न छानों सुन भौंरारे ॥ ४ ॥ त्रेपन किरिया नाहिं पिछानी, सत्रह नेम न जानी सुन भौंरारे ॥ ५ ॥ रात दिवसको भेद न पायौ, भक्ष्य अभक्ष्य जु खायौ सुन भौंरारे ॥ ६ ॥ पाप पुण्य कौ भेद न जानों जल बरतौ अनछानों सुन भौंरारे ॥ ७ ॥ जिनवर दरश करे नहिं भाई, खोटी गति बँधवाई सुन भौंरारे ॥ ८ ॥ सकल कलुषता उरमें धारी, सेई है परनारी सुन भौंरारे ॥ ९ ॥

गिरवर धारौ उर समताई, वरौ आठमी धरा जु भाई सुन भौंरारे ॥ १० ॥

(४१)

("भौंरारे" की चाल-विवाहमें)

तूने सार गमायौ, पाप कमायौ, धर्म सवै विसरायौ मनुआं मन भौंरारे ॥ टेक ॥ तूंने पुंजी वड़ाई, नफा न पाई, वड़ी विवूच मचाई मनुआं मन भौंरारे ॥ १ ॥ तूंतौ देव न जाने, कुदेव कुं माने झूठी वातें ठानें मनुआ मन भौंरारे ॥ २ ॥ तूं तौ पापतें जकड़ौ, जमधर पकड़ौ, धर्म काजमें सकरौ मनुआं मन भौंरारे ॥ ३ ॥ तूंतौ रो रो कीन्हौं, वहु दुख लीनौं, रहन कछू ना दीनौं मनुआं मन भौंरारे ॥ ४ ॥ तूंतौ हाथ न दीनौं, साथ न लीनौं, खोटौ कारज कीन्हौं मनुआं मन भौंरारे ॥ ५ ॥ तूतौ नरकन जैहै जब दुख पैहै, पश्चात्ताप करै है मनुआं मन भौंरारे ॥ ६ ॥ यह नर भव पाई, चेतहु भाई, वालकृष्ण सुखदाई मनुआं मन भौंरारे ॥ ७ ॥

४२

("भौंरारे" की चाल-विवाहमें)

परत्रिय सेवन कहा फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥ टेक ॥ देव दिवाले तें तुरतहि जाय मनुआ मन भौंरारे ॥ १ ॥ जाति पाँततें काढौ जाय मनुआं मन भौंरारे

राजा सुनैं तो दंड करेय मनुआं मन भौंरारे ॥ यातौ कथा या भव तनी मनुआं मन भौंरारे ॥ २ ॥ आगे का गति होय सुनौ मनुआं मन भौंरारे ॥ नर्क भूमि जब पहुंचे जाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ३ ॥ लोह पूतरी अंग भिड़ावें सुनौ मनुआं मन भौंरारे ॥ ताँबो सीसौ औंट पिआवें मनुआँ मन भौंरारे ॥ ४ ॥ कहैं देवीदास सुनौ गोपाल मनुआं मन भौंरारे ॥ परतिय, सेयें ये दुख होय मनुआं मन भौंरारे ॥ ५ ॥

(४३)

("भौंरारे" की चाल-वंदना मुंडन आदिमें)

पात्र अपात्र कुपात्र जु भेव सुनौ मनुआं मन भौंरारे॥ पन्द्रह भेद कहे जिनदेव मनुआं मन भौंरारे ॥ १ ॥ तिनमें पात्र दान शिव दाय मनुआं मन भौंरारे ॥ और सबहि जगमें भरमाय मनुआं मन भौंरारे ॥ २ ॥ दान बिना घर मसान समान मनुआं मन भौंरारे ॥ दान से पावे स्वर्ग विमान मनुआं मन भौंरारे ॥ ३ ॥ दान करैं घर होय पवित्र मनुआं मन भौंरारे॥ दान विना निर्फल सब कोय मनुआं मन भौंरारे ॥ ४ ॥ दान करौ भामंडल जी मनुआं मन भौंरारे ॥ दान करौ श्रीषेण अती मनुआं मन भौंरारे ॥५॥ दान करौ नृप शेखर पीठ मनुआं मन भौंरारे ॥ तीर्थंकर पद पाय सदीव मनुआं मन

भौंरारे ॥ ६ ॥ तातैं दान करौ मन लाय मनुआं मन भौंरारे॥गिरवर अविनाशी पद पाय मनुआं मन भौंरारे ७

(४४)

("भौंरारे" की चाल-व्याहु, मुण्डन आदिमें)

चारों दान भली विधि देव मनुआं मन भौंरारे ॥
चार दानकी विधि सुन लेव मनुआं मन भौंरारे ॥टेक॥
औषधि दानकौ कहा फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥
भव २ देह निरोगी होय मनुआं मन भौंरारे ॥ १ ॥
आहार दानकौ कहा फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥
भव २ ग्रह धन सम्पति होय मनुआं मन भौंरारे ॥ २ ॥
अभय दानकौ कहा फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥
परभव आयु वड़ी थिति होय मनुआं मन भौंरारे ॥३॥
शास्त्र दानकौ कहा फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥
भव २ में पढ़ पंडित होय मनुआं मन भौंरारे ॥ ४ ॥
चारों दान कौ यौ फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥चक्री, खगपति इन्द्र कहाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ५ ॥ चारों दान देओ मन लाय मनुआं मन भौंरारे ॥ भोगभूमि में जन्म लहाय मनुआं मन भौंरारे ॥ कहै देवीदास सुनौ गोपाल मनुआं मन भौंरारे ॥ दान दियें नर सुर शिव होय मनुआं मन भौंरारे ॥ ७ ॥

(४५)

("भौंरारे" की चाल-विवाह, मुंडन आदिमें)

जिन दर्शनतें कह फल होय मनुआं मन भौंरारे ॥टेक॥ जिन दर्शनकौ फल सुन लेव मनुआं मन भौंरारे॥ जिन दर्शनकौ जानों भेव मनुआं मन भौंरारे ॥ १ ॥ जो मनमें चिन्ते जिनराय मनुआं मन भौंरारे ॥ घर वैठो फल सहस उपाय मनुआं मन भौंरारे ॥ २ ॥ गमन करे जिन दर्शन काज मनुआं मन भौंरारे ॥ इक लख फल पावै महाराज मनुआं मन भौंरारे ॥ ३ ॥ जब जिनवर दृग देखे खोल मनुआं मन भौंरारे ॥ तब कोड़ा कोड़ी फल लेव मनुआं मन भौंरारे ॥ ४ ॥ यौ तौ है दृष्टान्त कहन्त मनुआं मन भौंरारे ॥ जिन दर्शनकौ फलहि महन्त मनुआं मन भौंरारे ॥ ५ ॥ जिन दर्शन ऐसी विधि जान मनुआं मन भौंरारे ॥ जब जिन मन्दिर ध्वजा लखान मनुआं मन भौंरारे ॥ ६ ॥ नमस्कार तब कीजे भाय मनुआं मन भौंरारे ॥ फिर आगेको गमन कराय मनुआं मन भौंरारे ॥ ७ ॥ जिन मन्दिर द्वारें शिर नाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ता पीछे भीतरको जाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ८ ॥ जय २ नाद करै धरि प्रेम मनुआं मन भौंरारे ॥ कोमल मन वच काय सु तेम मनुआं मन भौंरारे ॥ ९ ॥ जब पहुंचे जिनचरणन पास मनुआं मन भौंरारे ॥ तब मानों मन परम हुलास मनुआं मन भौंरारे

॥ १० ॥ आठ अंग युत वन्दे देव मनुआं मन भौंरारे ॥ गद्य पद्य स्तुति कर सेव मनुआं मन भौंरारे ॥ ११ ॥ बहुविधि फिर २ नमन कराय मनुआं मन भौंरारे ॥ चारों दिशिमें इहि विधि भाय मनुआं मन भौंरारे ॥ १२ ॥ फिर परिक्रमा दीजे तीन मनुआं मन भौंरारे ॥ त्रिधा रोग तहां कीजे छीन मनुआं मन भौंरारे ॥ १३ ॥ जप नमोकार सुनिये जिनवैन मनुआं मन भौंरारे ॥ तवै धरो समता थल एन मनुआं मन भौंरारे ॥ १४ ॥ पुनि सम्पुट युग मस्तक नाय मनुआं मन भौंरारे ॥ इस विधिदर्शन प्रीति लगाय मनुआं मन भौंरारे ॥ १५ ॥ मनोरमा जिनदर्शन कीन्ह मनुआं मन भौंरारे ॥ जिन दर्शन दृढ़-व्रत परवीन मनुआं मन भौंरारे ॥ १६ ॥ कमलश्री जिन-दर्शन धार मनुआं मन भौंरारे ॥ इत्यादिक बहु जीव अपार मनुआं मन भौंरारे ॥ १७ ॥ जिन दर्शन शिव सुखको देत मनुआं मन भौंरारे ॥ तिनको भविजन उर धर लेत मनुआं मन भौंरारे ॥ १८ ॥ जिनदर्शन विन पशू समान मनुआं मन भौंरारे ॥ दर्शनसे पावै निर्वाण मनुआं मन भौंरारे ॥ १९ ॥ जिनदर्शनसे शिव सुख होय मनुआं मन भौंरारे ॥ जिनदर्शन सम पुन्य न कोय मनुआं मन भौंरारे ॥ २० ॥ तातें दिन प्रति दर्शन धार मनुआं मन भौंरारे ॥ सो गिरवर पावै सुख सार मनुआं मन भौंरारे ॥ २१ ॥

(४६)

("भौंरारे" की चाल-विवाह, मुंडन आदिमें)

पंच परम सुमिरें सुख होय मनुआं मन भौंरारे ॥टेक॥ पंच मिथ्यात धरै जो कोय मनुआं मन भौंरारे ॥ पंच परावर्तन दुख होय मनुआं मन भौंरारे ॥ १ ॥ पांचों समिति धरें सुख होय मनुआं मन भौंरारे ॥ पंचाणुव्रत तें सुदिढाय मनुआं मन भौंरारे ॥ २ ॥ पंच पाप अनरथ करतार मनुआं मन भौंरारे ॥ पंचम थान चढ़ो भरपूर मनुआं मन भौंरारे ॥ ३ ॥ पांच पचत्तर दोष तजाय मनुआं मन भौंरारे ॥ पंचम ज्ञान लहै सुखदाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ४ ॥ पंच उदम्बर जीव अपार मनुआं मन भौंरारे ॥ तिनको तज होवे भव पार मनुआं मन भौंरारे ॥ ५ ॥ पंच वेग कामिनिके जान मनुआं मन भौंरारे ॥ तिनके त्यागें होय कल्याण मनुआं मन भौंरारे ॥ ६ ॥ पंच प्रकार निगोद अनन्त मनुआं मन भौंरारे ॥ तिन अनुकम्पा करौ महन्त मनुआं मन भौंरारे ॥ ७ ॥ पंच प्रमाद करौ दमनीय मनुआं मन भौंरारे ॥ पँच थावर राखौ भवि जीव मनुआं मन भौंरारे ॥ ८ ॥ पांचों परमेष्ठी सुखदाय मनुआं मन भौंरारे ॥ गिरवर पंचम गतिको जाय मनुआं मन भौंरारे ॥ ९ ॥

(४७)

("भौंरारे" की चाल-बंदना, मुंडन आदिमें)

तूं तौ नरक निगोदमें बहुदिन भटकौ अब करि शुद्ध सुभाऊ मन भौंरारे ॥टेक॥ तूंतौ लाख चौरासी योनिन-मांही धरे बहुत तन जाई मन भौंरारे ॥१॥ तूंतौ गर्भही के जे दुःख सहे हैं तेही बिसरे आई मन भौंरारे ॥ २ ॥ तूंतौ बालापन सब खेल गमायौ तरुणापने त्रिय भाई मन भौंरारे ॥ ३ ॥ तूंतौ मान गुमान करौ मद छाकौ बोलत है इतराई मन भौंरारे ॥ ४ ॥ तूंतौ मदकौ मातौ रहै न सांतौ जोरै सबसे नातौ मन भौंरारे ॥ ५ ॥ तूंतौ अधरम करने में धन खोयौ धरम सुने मुख मोरो मन भौंरारे ॥ ६ ॥ तूंतौ कुगुरु, कुदेवै सेवै ध्यावे मन आवे सो कराई मन भौंरारे ॥ ७ ॥ तूंतौ दुनियां केरे गुनियां जोरे परौ भरममें आई मनुआं मन भौंरारे ॥ ८ ॥ तूंतौ अपनी शक्ति सम्हारै नांही मृगतृष्णाको धाई मन भौंरारे ॥९॥ तूंतौ जब दुख पावे तब प्रभु ध्यावे सुखमें नाम भुलाई मन भौंरारे ॥ १० ॥ तूंतौ देने लेने में दिन खोयौ रात्री सोय गमाई मन भौंरारे ॥ ११ ॥ तूंतौ अनहोते में बातें मारै होते लोभ कराई मन भौंरारे ॥ १२ ॥ तूंतौ तीरथ व्रतको हल २ कम्पै पार कौन विधि पाई मन भौंरारे ॥ १३ ॥ तूंतौ दान पुण्य सुन मारन

धावै क्रोध करै अधिकाई मन भौंरारे ॥ १४ ॥ तूंतौ ज्ञान पुराण मनै नहिं भावे दुष्टन संगति भाई मन भौंरारे ॥ १५ ॥ तूंतौ आतम भजलै दोई तज दै तीन रतन लौलाई मन भौंरारे ॥ १६ ॥ तूंतौ चार संघकौं नौधा ध्यावै बाराव्रत मन लाई मन भौंरारे ॥ १७ ॥ तूंतौ पर-धन देख मनहि मन झूरै दीना था सो पाई मन भौंरारे ॥ १८ ॥ तूंतौ पंडित्त केरी सेवा करलै धरलै हियें उपाई मन भौंरारे ॥१९॥ तूंतौ यह करनी उर चितमें धरलै तज दै संग गमारी मन भौंरारे ॥ २० ॥ तूंतौ साध सन्त की सेवा करले जातैं तिर है पारी मन भौंरारे ॥ २१ ॥ तूंतौ केर बेर कौ मेला जैसौ ऐसौ फिरै सिधायौ मन भौंरारे ॥ २२ ॥ तूंतौ मरकट कैसी मूठ जु बांधी आपहि आप दबायौ मन भौंरारे ॥ २३ ॥ तूंतौ आशा बांधौ करतौ धन्धौ अन्धौ हियौ भुलायौ मन भौंरारे ॥ २४ ॥ तूंतौ ममता मोह नींद कर जकरौ पायौ नहीं ठिकानौ मन भौंरारे ॥ २५ ॥ तूंतौ इकदिन ऐसौ ह्वैहै प्राणी खाट छोड़ भौं पारौ मन भौंरारे ॥ २६ ॥ तूंतौ सैनन २ बोलत प्राणी कोई न चितमें धारौ मन भौंरारे ॥ २७ ॥ सम्वत् अठारा सै जु भये हैं इक्यावन उरधारौ मन भौंरारे ॥२८॥ कहै जसकरन शरण प्रभु तेरे मोकों पार उतारौ मन भौंरारे ॥ २९ ॥

(४८)

("जात करम कोपनियां" की चाल-ब्याहमें)

सुघर चेतन यह पनियां को निकरी पीछे कर्म लगैयां कि भाई मेरे जात करम कोपनियां ॥ १ ॥ माँय नें आय गये सुघर चेतन राय हलकों उठाय लई कंईयां कि भाई मेरे ॥ २ ॥ छोड़ो २ तुम मोरे करम हौं अब नहिं मुक्त दिखैयां कि भाई मेरे ॥ ३ ॥ अब तो कैसें छोड़ों चेतन-राय तुम को शुभ गति नईयां कि भाई मेरे ॥ ४ ॥ हीन बुद्धि अरु कवि लघुताई देवीदास कहैयां कि भाई मेरे ॥५॥

(४९)

(" जात करम कोपनियां " की चाल-ब्याहमें)

ऐसे चेतनराय पनियाँको निसरे जात करम कोपनि-यां, कि धीरें २ जात करम कोपनियां ॥ टेक ॥ रात दिवस दिनरैन घड़ी पल बीतत आयु घटनियां कि धीरें २ ॥ १ ॥ आठ करम भारी दुखदाता जे भव २ भरम-नियां कि धीरें २ ॥ २ ॥ नर्क, तिर्यंच, देव, मानुष जे चारों गति भटकानिया कि धीरें २ ॥ ३ ॥ सस तत्त्व नव द्रव्य पदारथ इन सरधा जु करइयाँ कि धीरें २ ॥ ४ ॥ पंच मिथ्यात्व पंच पापनको मन, वच, तन ताजनियां कि धीरें २ ॥ ५ ॥ जबहिं चेतन तुम पंचम पाई मुक्त वधू साजनियां कि धीरें २ ॥ ६ ॥ तानें चेतन सुरत

सम्हारौ नातर फिर पछतइयां कि धीरें २-॥७॥ दुर्लभ नर भव पाय लई है फिर पावे की नइयाँ कि धीरें २-॥ ॥८॥ जिनमत गारी रची चंदेरी गिरवर दास जु बनियाँ कि धीरे २ ॥ ९ ॥

(५०)

("सुनौजु" की चाल ब्याहमे)

लाख चौरासी योनि में भटकौ पुनि कुल कोड़ि बताउं सुनौजू ॥ टेक ॥ पृथ्वी, अगनि, पवन, जल इनकी सात २ लख गाऊं सुनौजू ॥ १ ॥ इतर निगोद, नित्य गोलक के सात २ लख पाऊं सुनौजू ॥ २ ॥ तरु दस लाख कहे इम थावर बावन लाख गिनाऊं सुनौजू ॥३॥ बे, ते, चौ इन्द्री दो २ लख पँच इन्द्री पशु चार सुनौजू ॥ ४ ॥ ऐसे बासठ लाख कहे सब तिर्यंचन समझाऊं सुनौजू ॥ ५ ॥ सुर नारक चव २, नर चौदह लाख चौरासी जनाऊं सुनौजू ॥ ६ ॥ अब कुल कोड़ि पृथ्वी बाइस लख पौन वारि सत सात सुनौजू ॥ ७ ॥ अनल तीन तरु आठ-वीस लख बेइन्द्री लख सात सुनौजू ॥ ८ ॥ ते इन्द्री वसु चौइन्द्री नव अहि नव थल दस लाख सुनौजू ॥९॥ जलचर साड़े बार गगन पति बारह लाख जताऊं सु-नौजू ॥ १० ॥ नर चौदह नारक पच्चीसों सुर छब्बिस बतलाऊं सुनौजू ॥ ११ ॥ शतक एक साड़े निन्याऊं

कोड़ा कोड़ि गिनाऊं सुनौजू ॥ १२ ॥ ऐसी चहुंगति भरमी गिरवर तातें दया सिखाऊं सुनौजू ॥ १३ ॥

(५१)

(" सुनौजु " की चाल, व्याहमें)

काना से आये कहां तुम जैहौ काना रहे लुभाइ सुनौजू ॥ टेक ॥ कौन के बंधु हितू बैरी को कौन तात को माइ सुनौजू ॥ १ ॥ बेटा वनिता कुटुम पौरिया कौनकी है ठकुराइ सुनौजू ॥ २ ॥ कौनके महल अटम्बर दलबल कौन की संनति जाइ सुनौजू ॥ ३ ॥ हरि हलधर चक्रे-श्वर मन्मथ काहूके संग न जाइ सुनौजू ॥ ४ ॥ पुण्य पाप लय उदय व्यवस्था आवे जाय पलाइ सुनौजू ॥ ५ ॥ कुटुम कबीला अपनी गरज के ज्यों तरुपंथ सहाइ सुनौजू ॥ ६ ॥ दो दिनके मिजमान बनें फिर गैल आपनी जाइ सुनौजू ॥ ७ ॥ कर्मनवश मेला ज्यों जुरियौ लेवहु पुन्य कमाइ सुनौजू ॥ ८ ॥ कोउ परजीव हितू नहिं बैरी धर्म एक सुखदाइ सुनौजू ॥ ९ ॥ गिरवर एक शरण जिन सांचौ और सबै कुटिलाइ, सुनौजू ॥ १० ॥

(५२)

("हमारे आतमा" की चाल-हरसमय)

अब के नरतन पाइयौ मोरे आतमा ॥ सो खाद, अ-खाद न खाय हमारे आतमा ॥ टेक ॥ ओरा घोर जले-

खिया मोरे आत्मा ॥ निशि भोजन बिदल न खाय ह-
मारे आत्मा ॥ १ ॥ बहु बीजक बैंगन कहे मेरे आत्मा
संधाना (अथाना) कधी न खाय हमारे आत्मा ॥ २ ॥
बड़ पीपल कठऊमरा मेरे आत्मा ॥ ऊमर पिलकर त्रस
थाय हमारे आत्मा ॥ ३ ॥ विन जानौ फल ना भखौ
मेरे आत्मा ॥ सब कन्द मूल सु तजाय हमारे आत्मा
॥ ४ ॥ विष माटी मक्खन तजौ मेरे आत्मा ॥ मद मांस
तजौ दुखदाय हमारे आत्मा ॥ ५ ॥ छोटौ फल मत
खाइयौ मेरे आत्मा ॥ रस चलित वस्तु नहिं खाय ह-
मारे आत्मा ॥ ६ ॥ फूल तुखार अखाद्य है मेरे आत्मा ॥
इत्यादिक और गिनाय हमारे आत्मा ॥ ७ ॥ जे वावीस
अभक्ष हैं मेरे आत्मा ॥ इनके फल दुर्गति जाय हमारे
आत्मा ॥ ८ ॥ तातें इनको त्यागिये मेरे आत्मा ॥ ये
भव २ में दुखदाय हमारे आत्मा ॥ ९ ॥ धर उत्तम
कुल आचार हमारे आत्मा ॥ सो तो गिरवर प्रभु गुण
गाय हमारे आत्मा ॥ १० ॥

(५३)

(" प्रभुजी " की चाल-भोजनके समय)

देवन देव स्वामी जिन अपने को सुमरण के गुण गाऊं
कि प्रभुजी ॥ गगन मँड़न मोरे सजना बसत हैं उनही
को न्यौत जिमाऊं कि प्रभुजी ॥ १ ॥ काहे की पातल

काहे कौ दौंना काहे की सींक लगाऊं कि प्रभुजी ॥ करनी की पातर कथनी कौ दौंना ज्ञान की सींक लगाऊं कि प्रभुजू ॥ २ ॥ नेम के नीरन चरण पखारों चित चौका बैठाऊं कि प्रभुजी ॥ सोनेके थारन व्यंजन परोसे रूपे करछुल दूधा कि प्रभुजी ॥ ३ ॥ भावके भात दया की दालें क्षमाके थरूला बनाऊं कि प्रभुजी ॥ ममता के माड़े साहस कि फैनी प्रेमके घीव परसाऊं कि प्रभुजू ॥ ४ ॥ रहनी कौ दूध साहस कौ खोवा शक्कर सुमति मिलाऊं कि प्रभुजी ॥ पांच पचीस पकर नव नारी सजनाको गीत गवाऊं कि प्रभुजी ॥ ५ ॥ जो सुख पावें जेवें सजना हमारे स्वासा पवन डुलाऊं कि प्रभुजी ॥ सत्त तमोली बरई हमारे सजनोंको बिड़ियाँ चबाऊं कि प्रभुजी ॥ ६ ॥ पांच पान पँच बिड़ियां लगाई वाही में लौंग ठटाऊं कि प्रभुजी ॥ लौंग लायची प्रेम मसाले सजनों को स्वाद चखाऊं कि प्रभुजी ॥ ७ ॥ मन भर केसर दिल भर चन्दन सजनोंको खूब लगाऊं कि प्रभुजी ॥ इकहस खंड महल इक राखौ निर्भय पलंग बिछाऊं कि प्रभुजी ॥ ८ ॥ शील सन्तोष खवास हमारे सजनोंके पांव दबाऊं कि प्रभुजी ॥ गारी गवाऊँ गिरवर सुनाऊँ सज्जन चित बहलाऊं कि प्रभुजी ॥ ९ ॥

(५४)

(गीत-भोजनके समय)

श्रीगुरु आये मोरे पाहुने धन भाग हमारे ॥ टेक ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञानके अनहद् वजत नगारे ॥ कंचन जल अति सीयरे गुरु चरण पखारे ॥ १ ॥ चन्दन चौकी धर-दई गुरु आन पधारे ॥ सुन्नेके थार आहार दियौ गुरु जेंवन लागे ॥ २ ॥ कंचन झारी भराइयौ गुरु अँचवन लागे ॥ संजम विड़ियाँ लगाइयौ गुरु चावन लागे ॥ ३ ॥ गुरु हो चले शिवदेश को सब मिल करी हैं जुहारें ॥ गुरु उपदेशौ गिरवरदास कों अरु पार लगावो ॥ ४ ॥

(५५)

("मोरेलाल"की चाल-दामादके जीमते समय)

आगूं २ राम चलत हैं पीछे लछमन भाई मोरे लाल ॥ १ ॥ तिनके पीछे भरत शत्रुघन शोभा बरनी न जाय मोरे लाल ॥ २ ॥ राम हँसें लक्ष्मण मुसक्यावें कौन जनकजू की पौरें मोरे लाल॥३॥ ऊंची अटरियां लाल कि-वरियां सूरज सामूँ द्वार मोरे लाल ॥४॥ जाय जु पहुंचे जनक जू के द्वारें अनहद वाजे वाजें मोरे लाल ॥ ५ ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल चन्दन खौर विराजे मोरे लाल ॥ ६ ॥ चरण पखार हरष अति कीन्हों उज्जल अ-क्षत माथें मोरे लाल ॥ ७ ॥ हाथ जोर शिरनाय जनक

कहैं भीतर चलवौ होय मोरे लाल ॥ ८ ॥ पकर छिंगु रिया भीतर लैगये तखत दये लटकाय मोरे लाल ॥ ९ ॥ चारों भाई बैठे तखत पै शोभा वरनी न जाय मोरे लाल ॥ १० ॥ इँजन विंजन और निगौना रैहनके दृश दौना मोरे लाल ॥ ११ ॥ वरी कचौरी अरु मैदा की चूरौ पापर ल्याव मोरे लाल ॥ १२ ॥ सेमें (वालौरें) वनाई अधिक रसीलीं केरा छोंक वघारे मोरे लाल ॥ १३ ॥ सोनेके थाल परोसे जनकजू रूपेके वेलन दूध मोरे लाल ॥ १४ ॥ ठाडे जनकजू अरज करत हैं कुंवर कलेऊ होय मोरे लाल ॥ १५ ॥ कुँवर कलेऊ जवहि जु हुइ है हमरौ नेग ल्याव मोरे लाल ॥ १६ ॥ हाथ जोरके अरज करत हैं हम क्या देवे सक मोरे लाल ॥ १७ ॥ तुम तो हौ राजन के राजा हमका देवे लायक मोरे लाल ॥ १८ ॥ गोवर को गुवरारी दीनी, पानीको पनिहारी मोरे लाल ॥ १९ ॥ झनझन झारी गंगाजल पानी कुंवर कलेवा होय मोरे लाल ॥ २० ॥ सारी सराजें गारी गावें सारे लगावें पान मोरे लाल ॥ २१ ॥ वीड़ा चावत वाहिर निकसे पांवडी दई हैं लुकाय मोरे लाल ॥ २२ ॥ हमरी पांवडीं कौने लुकाईं हमको जल्दी वताव मोरे लाल ॥ २३ ॥ तुम्हरी जु कहिये ललिता सारी ताने दई हैं लुकाय मोरे लाल ॥ २४ ॥ पांवडीं तुमरी जवही मिल है हमरौ नेग ल्याव

मोरे लाल ॥ २५ ॥ दहिने हाथकी पैंती उतारी ललि- तै दइ पहिराय मोरे लाल ॥ २६ ॥ इस विधि कुंवर कलेऊ करके डेरें पधारे राम मोरे लाल ॥ २७ ॥

(५६)

(" हां मोरे लाल" की चाल-हरसमय)

चौंबीसों जिन सज्जन आये सब मिल करत प्रणाम कि हां मोरे लाल ॥ १ ॥ जीवनको मिजमानी लाये धारौ अन्तर मांझ कि हां मोरे लाल ॥ २ ॥ ज्ञान दरश इक घोड़ा लाये समकित कौ असवार कि हां मोरे लाल ॥ ३ ॥ जिनवानी कौ चावुक लाये देखत ही उड़जाय कि हां मोरे लाल ॥४॥ उड़कर पंछी शिवपुर पहुंचे फिर नहिं आवन जान के हां मोरे लाल ॥ ५ ॥ अटल मूर्ति अवगाहन राजा नर त्रिय करत प्रणाम कि हां मोरे- लाल ॥ ६ ॥ जो कुबुद्धि यह छोड़ सवारी नेरु तलें फिर जाय कि हां मोरे लाल ॥ ७॥ राजू सातमें दुःख सहोगे भ्रमौ अनन्तौ काल कि हां मोरे लाल ॥ ८ ॥ बालचन्द यह अरज करत है पकरौ मेरी बांह कि हां मोरे लाल ॥ ९ ॥ जब लग भवकौ पार न पाऊं राखों नाम अधार कि हां मोरे लाल ॥ १० ॥

(५७)

(" मोरे लाल " की चाल-हरसमय)

कहना से तुम आये वारे हंसा कहना को तुम जाव मोरे लाल ॥ १ ॥ अग्गम दिशासे आये मोरे हंसा पश्चिम दिशाको जाँय मोरे लाल ॥ २ ॥ कहा संग ले आये वारे हंसा कहा संग लेजाव मोरे लाल ॥ ३ ॥ मुठी बांधके आये वारे हंसा हाथ पसारे जाव मोरे लाल ॥ ४ ॥ ऐसी करनी कर चलो हंसा फेर न जगमें आव मोरे लाल ॥ ५ ॥ लाल विनोदी अरज करत हैं मनुष जनम फल पाव मोरे लाल ॥ ६ ॥

(५८)

("मोरे लाल" की चाल-विवाहमें)

धन २ होवे रजमत बेटी जिनवरसे वर पाये मोरे लाल ॥ टेक ॥ सजीं बरातें आईं जूनागढ सुर नर खग हरषाये मोरे लाल ॥ १ ॥ छप्पन कोट संग यदुवंशी चतुरँग सेना लाये मोरे लाल ॥ २ ॥ एरावतपर सोहैं प्रभूजी माथे मुकुट सुहाय मोरे लाल ॥ ३ ॥ कानन कुंडल हाथन चूरा सोहै रतन जड़ाउ मोरे लाल ॥ ४ ॥ कंठ सिरी दुलरी छवि छाजे मोतिन माल सुहाइ मोरे लाल ॥ ५ ॥ कर कंकण की शोभा न्यारी पाँयन मोजे जराव मोरे लाल ॥ ६ ॥ कटि किंकाणि करधौनी सोहै

मानौं दामिनि दमकै मोरे लाल ॥ ७ ॥ पहिरें पीत कुसुंभी वागौ फेंटा जरकस सोहै मोरे लाल ॥ ८ ॥ सुरपति हाथ चमर शिर ढोरें माथे छत्र विराजे मोरे लाल ॥ ९ ॥ भेरि मृदंग बीन सहनाई बाजे बजत सुहाये मोरे लाल ॥ १० ॥ सुर किन्नर मिल गान करत हैं देख अप्सरा नाचें मोरे लाल ॥ ११ ॥ देखत सब नरनारि नगरके विहँस विहँस हरषाय मोरे लाल ॥ १२ ॥ सहस नेत्र करि सुरपति निरखत जनम सफल करपाये मोरे लाल ॥ १३ ॥ दयाचन्द वन्दत कर जोरे चरणन शीस नवाय मोरे लाल ॥ १४ ॥

(५९)

("मोरे लाल" की चाल-विवाहमें)

सजना हो मोरी शील चुनरिया प्यारी सुरँग रँगीली लाल ॥ लै दीनी सतगुरु ने हमको कौन कौन गुन कहिये मोरे लाल ॥ टेक ॥ वा चुनरी की शोभा देखौ तीन लोकमें महिमा लाल ॥ सुरनर नाग लोकको देखै शील चुनरिया ऐसी मोरे लाल ॥ लैदीनी सतगुरुने-॥ १ ॥ जा चुनरी सीताने ओढ़ी अग्नि कुंड जल होगयौ लाल ॥ सोमा सती चुनरिया ओढी फणिकी माल भई मोरे लाल-॥ २ ॥ कौरवसभा बीच रहि लज्जा सती द्रौपदी ओढ़ी लाल ॥ श्रीपालकी मैना सुन्दरि देवसहाई कीनी

मोरे लाल ॥ ३ ॥ सती अंजना निर्जन बनमें सिंघ आय जब घेरी लाल ॥ देव सहाय भये इक छिनमें अष्टापद तन धारे मोरे लाल ॥ ४ ॥ पावक तें जल होय छणक में फन से माला होवे लाल ॥ सागरसे थल होवे ज्ञानी सिंघ स्याल सम होवे मोरे लाल ॥ ५ ॥ धन २ भाग सुहाग मनोहर नरतन जनम सफल भयो लाल ॥ शील सिंगार विना सब निर्फल दयाचंद धारौ मोरे लाल ॥ ६ ॥

(६०)

("बाजें नेवरा घने" की चाल-विवाहमें)

आज अनन्द वधाये तो बाजें नेवरा घने ॥ देख समद विजयजूके लाल तो बाजें नेवरा घने ॥ टेक ॥ ब्याहन झूनागढ़ आये तो बाजें नेवरा घने ॥ सिवदिव्याके परम अधार तो बाजें नेवरा घने ॥ १ ॥ साजे कृष्ण मुरारि तो बाजें नेवरा घने ॥ सब साजे सुर खग इन्द्र तो बाजें नेवरा घने ॥ २ ॥ जादों नृप सब साजियौ बाजें नेवरा घने ॥ हय गय रथ असवार तो बाजें नेवरा घने ॥ ३ ॥ गीत किन्नरी गावें तौ बाजें नेवरा घने ॥ अपछरा नचत वधाई तो बाजें नेवरा घने ॥ ४ ॥ सब सज्जन मिल आइयौ बाजें नेवरा घने ॥ श्रीउग्रसैन दरबार तो बाँजें नेवरा घने ॥ ५ ॥ देख परम सुख पाइयौ बाजें नेवरा

घने ॥ ऐसे श्रीजिन दीनदयाल तो वाजें नेवरा घने ॥६॥ कंचन कलश भराइयौ वाजें नेवरा घने ॥ पठये श्रीकृष्ण-जीके वाग तो वाजें नेवरा घने ॥ ७ ॥ भई रसोई वागमें वाजें नेवरा घने ॥ स्वामी सव जीमी जिंवनार तो वाजें नेवरा घने ॥ ८ ॥ भई है सांझ की वेरा तो वाजें नेवरा घने ॥ चाले उग्रसैनजीके द्वार तो वाजें नेवरा घने ॥ ९ ॥ हय गज रथ पायक सजे वाजें नेवरा घने ॥ जहां वाजे वजे हैं अपार तो वाजें नेवरा घने ॥ १० ॥ कलश वन्दना भई तौ वाजें नेवरा घने ॥ गावें सखि मंगलचार तो वाजें नेवरा घने ॥ ११ ॥ टीका कीन्हों है राय तो वाजें नेवरा घने ॥ पशुजीवन करी है पुकार तो वाजें नेवरा घने ॥ १२ ॥ प्रभु दीनानाथ दयाल तो वाजें नेवरा घने तव पूंछियौ नेम कुमार तो वाजें नेवरा घने ॥ १३ ॥ काहे को ये पशु आन घिराये तो वाजें नेवरा घने ॥ तव अरज सारथी यों करी वाजें नेवरा घने ॥ १४ ॥ जे सव जिउ घाते जांय तो वाजें नेवरा घने ॥ जिननाथसे करी है पुकार तो वाजें नेवरा घने ॥ १५ ॥ धृग २ है यह काज तो वाजें नेवरा घने॥ वहु जीवन होय अकाज तो वाजें नेवरा घने ॥१६॥ छांडो २ पशुनकी वंध तो वाजें नेवरा घने ॥ अर हम जावें गिरनार तो वाजें नेवरा घने ॥ १७ ॥ तव उग्रसैन कर जोड़ियौ वाजें नेवरा घने ॥

छोडौं छोड़ों में इनकी बंध तौ बाजें नेवरा घने ॥१८॥ तुम हौ प्रभु दीन दयाल तो बाजें नेवरा घने ॥ तुम मत जाओ गिरनार तो बाजें नेवरा घने ॥१९॥ तब प्रभुजीने यों भाखियो बाजें नेवरा घने ॥ या जगकौ अथिर स्वभाव तो बाजें नेवरा घने ॥ २०॥ प्रभु मन उपजौ वैराग तो बाजें नेवरा घने ॥ अब आगयौ तप कौ जोग तो बाजें नेवरा घने ॥ २१ ॥ दयाचन्द विनती करें बाजें नेवरा घने ॥ मेरी काटौ करम जँजीर तो बाजें नेवरा घने ॥ २२ ॥

(६१)

("बाजें नेवरा घने" की चाल-विवाहमें)

चेतन राय कुमति निकारियौ बाजें नेवरा घनें ॥ अरु घर तें दई है निकार तौ बाजें नेवरा घने ॥टेक॥ चारहि गति कुमती फिरे बाजें नेवरा घने ॥ ताकी कोऊ न पूंछे बात तो बाजें नेवरा घने ॥ १ ॥ तब मन चंचल यों चिन्तवै बाजें नेवरा घने ॥ अब कुमति न मो ढिग आव तो बाजें नेवरा घने ॥ २ ॥ यों कुमति नारि को त्यागियौ बाजें नेवरा घने ॥ वो तो दुर्गति को लेजाय तो बाजें नेवरा घने ॥ ३ ॥ सुमति नारि को सँग गहौ बाजें नेवरा घने ॥ वातौ सुरगन को लेजाय तौ बाजें नेवरा घने ॥४॥ यों गिरवरदास अरज करें बाजें नेवरा घने ॥ कोई कुमति न धारौ भूल तौ बाजें नेवरा घने ॥ ५ ॥

(६२)

("टांडौ लाधें जोवन जरवा" की चाल-विवाहमें)

टांड़ौ लाधें जोवन जरवा ॥ टाडौ लाधें जोवन जरवा ॥ टेक ॥ पूरव लाधे पश्चिम लाधे, लाधे दखिन उतरवा ॥ ऊरध लाधे नीचें लाधे, लाधे मध्यम पुरवा ॥ १ ॥ थावर लाधे जंगम लाधे, लाधे त्रस अरु थरवा ॥ विकल सकल दोऊ हम लाधे जनम मरण हम करवा ॥ २ ॥ नर्क तिर्यंच मनुज सुरमें हम गति चारों दुख भरवा ॥ पंच परावर्तन हम भटके पंच मिथ्यात्व सहरवा ॥ ३ ॥ शतक तीन तेतालिस राजू संपूरन छिति भरवा ॥ बहु विधि विषय कषाय भजौ हम सो किमि जात उचरवा ॥ ४ ॥ हम पापी पापन के भाजन सोही करत सपरवां ॥ तातें चेतन अब सुनलीजे धीरज धर्म नजरवां ॥ ५ ॥ अनुकंपा षट काय सभी पर धारौ धर्म मिहरवाँ ॥ या व्रत सेती बहुतक तिरगये जिन धारे दुख हरवा ॥ ६ ॥ तातें भूल करहु जनि भाई यह औसर है तरवा ॥ गिरवर दास भायजी गावत नगर चँदेरी परवा ॥ ७ ॥

(६३)

("हां कि ना रे" की चाल-हरसमय)

हां कि ना रे, खोटे काम करौ मत भाई ॥ टेक ॥ परजिय घात करौ मति कोई हां कि ना रे ॥ परदुख तें

आपों दुख होई ॥ १ ॥ झूठी वात कहन की नाहीं हां कि ना रे ॥ झूठ कूट तें दुर्गति जाई ॥ २ ॥ परचोरी नरकन की दाता हां कि ना रे ॥ याकों छोड़ लहौ सुख साता ॥ ३ ॥ पापन की जड़ है परदारा हां कि ना रे ॥ दूर करौ ऐसो भ्रम भारा ॥ ४ ॥ परिग्रह तृष्णा अति दुख दाई हां कि ना रे ॥ याकों तजें लहै सुख थाई ॥ ५ ॥ पंच पाप वहु दुख के दाता हां कि ना रे ॥ वहु प्रकार भ्रम करे असाता ॥६॥ सात व्यसन सातों नरकाना, हां कि ना रे ॥ अधिक हरामी गति भरमाना ॥७॥ परनिन्दा नहिं भूल करिजे हां कि ना रे ॥ पर चुगली कवहूं नहिं कीजे ॥८॥ आप वडाई करहु मति भाई, हां कि ना रे ॥ कटुक वचन बोले नहिं जाई ॥ ९ ॥ मीठी वानी सब से बोलो, हां कि ना रे ॥ परगट जगमें आपा खोलौ ॥ १० ॥ समता भाव धरौ उर मेरा, हां कि ना रे ॥ जिनवर भक्ति करौ हो चेरा ॥ ११ ॥ विकथा चार तजौ दुखकारी, हां कि ना रे ॥ चारों कथा करौ हो चारी ॥ १२ ॥ धरि सन्तोष लोभ परिहारी, हां कि ना रे ॥ गिरवर दास होय भवपारी ॥ १३ ॥

(६४)

("रसिया" विवाहमें)

ऐसे नेमीश्वर रसिया विरासिया मुक्ति वधू मन वसिया, जल्दी सों मुक्ति वधू मन वासिया ॥ टेक ॥ जी-

जन ऊपर करुणा करी है तज नारी गिर वसिया, जल्दी सौं मुक्ति वधू मन वसिया ॥ १ ॥ शील शिरोमणि रतन जगत में दया दान नित करिया, जल्दी सौं मुक्ति वधू मन वसिया ॥२॥ षट् कायन की दया करे तें जय २ देव उचरिया, जल्दी सो मुक्ति वधू मन वसिया ॥ ३ ॥ बालचन्द जिन दया न पाली गत चारों दुख सहिया जल्दी सौं मुक्ति वधू मन वसिया ॥ ४ ॥ जिन जीवन ने दया करी है नेम प्रभू गह वहियां, जल्दी सों मुक्ति वधू मन वसिया ॥ ५ ॥

(६५)

("रसिया" विवाहमें)

जानर देही तुमने पाय लई हो जन्म सुफल करलेव मोरे रसिया ॥ टेक ॥ ऐसी विधि से दान दीजिये हो आवागमन मिटजाय मोरे रसिया ॥ १ ॥ पंच अनुव्रत तीन गुणाव्रत धारौ जातें धरम हिय वसिया ॥ २ ॥ चौ शिक्षाव्रत पालियौ मुक्ति वधू से प्रीति मोरे रसिया ॥ ३ ॥ दुर्द्धर तप व्रत पालियौ मुनि तेरह विधि चारित मोरे रसिया ॥ घट बढ दस्कत जानियौ हो गिरवर शोध लेव मोरे रसिया ॥ ५ ॥

(६६)

("आसों के साहुन सैंया घर रहौ की चाल" श्रावण)

बाल पनै प्रभु घर रहौ अरे नेमनाथ जिनराय, बाल-

पने प्रभु घर रहौ ॥टेक॥ समुद विजय नृप तात जी शिव देवी तुम्हारी माय, ॥ छप्पन कोटी यादवा सब और वि- भव अधिकाय, वालपने प्रभु-॥ १ ॥ गजकुमार हरि पति किसन पुनि हलधर से हैं भाय, ॥ राज मती प्रमुखी सती हैं इत्यादिक सुखदाय, वालपने प्रभु-॥ २ ॥ इन को तजि व्रप क्यों भजौ शेपावन (सहस्राम्र वन)में जाय, ॥ गिरनारी शिवपति चरण तहां वन्दे गिरवर जाय, वालपनै प्रभु घर रहौ हो नेमनाथ जिनराय॥ ३ ॥

(६७)

(दादरा हरसमय)

नेम विन नहीं रहौं दिन रैन घटी पल याम ॥ टेक ॥ भोजन पान नहान, जे रस गंध विलेपन जान ॥ गीत नि- रन ताम्बूल जे मैथुन पुनि वस्तु प्रमान ॥ टेक ॥ १ ॥ आभूषण वाहन गमन सेज्यासन सचित पच्चान ॥ इहि विधि सत्रह नेम जे धारौ नित्त दिन कल्याण ॥ २ ॥ हिंसा झूठ कुशील चोरि तज परिग्रह कौ परमान ॥ दि- गव्रत देश अनर्थ जु धारौ मन वच तन कर मान ॥ ३ ॥ सामायिक प्रोषध करो दोई भोगन संख्या ठान ॥ अ- तिथि संविभाग करौ जे वारह व्रत्त महान ॥ ४ ॥ पृथ्वी जल अरु अनिल सु पुनि पवन वनस्पति काय ॥ थावर पंच न घातिये इन घातें पाप बंधाय ॥५॥ त्रस कायाकी

ढाल कें सब जीव समान लखान ॥ चौदह उन्निस और सतावन अट्ठाउनवै मान ॥ ६ ॥ जीव दया नित कीजिये जो सार धर्म का चिन्ह ॥ धर्म करंता जीव जो पावे पदवी अजघन्य ॥ ७ ॥ इहि विधि दिन प्रति धारियौ क्रिया व्रत नेम महान ॥ गिरवर चंदीपुर नमों चौवीसी अनुपम थान ॥ ८ ॥

(६८)

(दादरा-हरसमय)

सिद्धन को शीस नमाऊं, सदा जिनके गुण गाऊं ॥ टेक ॥ लोक शिखर के शीश विराजें तिनकौ ध्यान लगाऊं ॥ अजर अमर नितही अविनाशी चिन्मूरत मन लाऊं ॥ १ ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञान अगुरु लघु ने आठों गुन गाऊं ॥ दयाचन्द तिन चरण कमल को हियरा मांझ मडाऊं ॥ २ ॥

(६९)

(दादरा-हरसमय)

नरभव रतन गमाया, धरम कौ भेदई न पाया ॥टेक॥ निशदिन भूल रहे विषयन में ज्यों तरवर की छाया ॥ कुगुरु कुदेव करी बहु सेवा विरथा काल गमाया ॥ १ ॥ जिनवाणी निज कान सुनी ना हिरदें ज्ञान न आया ॥ दयाचन्द जिन मत सेये बिन जग का पार न पाया ॥ २॥

(७०)

(दादरा-हरसमय)

निश भोजन दुख दाई, तजौ मन वच तन भाई॥टेक॥ निश के मांहि रसोइ करत ही जीव मरें अधिकाई॥ जोर धुँवा को अगनि की ज्वाला गिनती कौन घनाई॥ १॥ एक दियामें जीव असंखे देखत ही मरजाई॥ दयाचन्द भोजन के माहीं जीव गिरें अधिकाई॥ २॥

(७१)

(दादरा-हरसमय)

श्री वामा जू के प्यारे॥ हमें गिनियों नहिं न्यारे॥ टेक॥ अंजन चोर महा अघ करना छणमें पार उतारे॥ गौतम द्विज मिथ्यात दूर कर गणधर पद दातारे॥ १॥ शूकर सिंह नकुल अरु बांदर औगुण नाहिं विचारे॥ दयाचन्द चरणन को चेरो हो तुम तारन हारे॥२॥

(७२)

(दादरा-हरसमय)

धरम धन जोड़ियों मोरी गुइयाँ, जगत सुख मोड़ियों मोरी गुइँया॥ टेक॥ कै मोरी गुइँया हिंसा को करो परिहार दया जीव पालियो मोरी गुइयां॥ १॥ कै मोरी गुइयां चोरी बड़ी दुख खोरी राज दुख देयरी मोरी गुइँया॥ २॥ कै मोरी गुइयां झूटी बड़ी ही खोटी सांच

हिय धारौरी मोरी गुँइयां ॥ ३ ॥ कै मोरी गुँइयां धन, कन, पशुव घटाव महा अघ मूल हैं मोरी गुँइयां ॥ ४ ॥ कै मोरी गुँइयां शील रतन अनमोला सदा हिय धारियौ मोरी गुँइयां ॥ ५ ॥ कै मोरी गुँइयां दयाचन्द गह लीजे अनोव्रत पांच जे मोरी गुइँयां ॥ ६ ॥

(७३)

(दादरा-हरसमय)

जगत सब झूठौरी मोरी गुँइयां ॥ धरम धन मोटौरी मोरी गुइयां ॥ टेक ॥ कै मोरी गुँइयां झूठौ कुटुम परवार सोनो अरु चांदीरी मोरी गुँइयां ॥ १ ॥ कै मोरी गुँइयां स्वारथ कौ संसार सटैं कोई पूंछे ना मोरी गुँइयां ॥ २ ॥ कै मोरी गुँइयां थोडीसी नर परजाय पाप नहिं बांधिये मोरी गुँइयां ॥३॥ कै मोरी गुँइयां जग दुख मेरु समान सुक्ख जैसे राइ है मोरी गुँइयां ॥४॥ कै मोरी गुँइयां सुनिये कथा पुराण धरम नित पालिये मोरी गुँइयां ॥ ५ ॥

(७४)

(दादरा-हरसमय)

जातन लगी सोई जाने दूसरा क्या जाने भाई ॥टेक॥ दादुर पँखुडी लैचलौ जिन पूजन मनलाई ॥ गज पुनि चरण परौ ता ऊपर सुरग देव भयौ जाई ॥ दूसरा क्या जाने भाई ॥१॥ श्रीपाल की देह गलित भई कुष्ट व्याधि

दुखदाई ॥ श्री चरणोदक अंग लगायौ कंचन देह बनाई॥ दूसरा क्या जाने भाई ॥ २ ॥ सीता शील ध्यान निस वासर प्रभु चरणन लौंलाई॥ जब ही अग्नि कुंड में परियौ सागर नीर बहाई ॥ दूसरा क्या जाने भाई ॥ ३ ॥ कहत खुमान लाज रह मेरी तुम त्रिभुवन के राई ॥ अष्ट करम रिपु पिंड गहौ है तासें लेहु छुडाई ॥ दूसरा क्या जाने भाई ॥ ४ ॥

(७५)

(दादरा-हरसमय)

मोरौ तो मन मोरौ साखी गढ़ गिरनारवे ॥ होरी मैं खेलन जैहौं जहां मुनिराजवे ॥ टेक ॥ मुक्त रमन में मोरो साखी मचरहै ख्यालवे ॥ चंदनकी पिचकारी छूटे ज्ञान गुलालवे ॥ १ ॥ दशलक्षण कौ बागौ पहिने श्री मुनिराजवे ॥ रत्नत्रय की माला पहिनें तप कौ करें प्रकाशवे ॥ २ ॥ आदीश्वर से करों बीनती जोरों दोई हाथ वे ॥ मोरौ तो मन मोरौ साखी गढ गिरनारवे ॥ ३ ॥

(७६)

(दादरा-हरसमय)

मत बरजौ मोरी माई हमको गिरनारी को जानेदो, मत छेड़ो मोरी-॥ टेक ॥ बाजत ताल मृदंग मधुरि ध्वनि अलगोजा सन्नाई, अरी मा अलगोजा सन्नाई ॥ १ ॥ सम-

वशरण सब देवन रचियौ रतनन जड़े जडाई, अरी मा रतनन जड़े जडाई ॥ २ ॥ आठ दरव लै पूजा कीन्ही मन बांछित फलदाई, अरी मा मन बांछित फलदाई ॥ ३ ॥ आपुनि जाय चढे गिरनारी सुधि मेरी विसराई, अरी मा सुधि मेरी विसराई ॥ ४ ॥

(७७)

(दादरा-हरसमय)

अरी तुम कौन हौ प्यारी, फुलवा बीनन हारी ॥ टेक ॥ काहे कौ तोरौ बनौ बगीचौ काहे की है फुलवारी ॥ १ ॥ रतन जड़त कौ बनौ बगीचौ फूल रही फुलवारी ॥ २ ॥ समुद विजय जी ससुर हमारे उग्रसैन धिय प्यारी ॥ ३ ॥ नेमनाथ जी पती हमारे हम हैं राजुलनारी ॥ ४ ॥ इतै द्वारका इत झूनागढ़ मध्य शिखर गिरनारी ॥ ५ ॥ गिरवर अरज करत प्रभुजी से तारौ मोहि भव तारी ॥ ६ ॥

(७८)

(दादरा-हरसमय)

सकल सुख केरा, सुनिये प्राणी सकल सुख केरा ॥ टेक ॥ सात तत्व नव पद षट कायिक जीव और बहुतेरा ॥ सुनिये प्राणी० ॥ १ ॥ थावर पंच एक त्रस ऊपर धारौ दया सवेरा, सुनिये प्राणी० ॥ २ ॥ विकलत्रय दो, तीन, चौइन्दी तिनकौ कर निरवेरा, सुनिये प्राणी ॥ ३ ॥ सैनी

और असैनी दूजे लखैं ज्ञान भवि जेरा, सुनिये प्राणी० ॥ ४ ॥ नरक गती सातों नरकाना पापननी या घेरा, सुनिये प्राणी० ॥ ५ ॥ छेदन भेदन शूलारोपन यंत्र मंत्र कंटरा, सुनिये प्राणी० ॥ ६ ॥ चतुरि तिर्यंच योनि के मांही दुःख सहे बहुतेरा, सुनिये प्राणी० ॥ ७ ॥ इतर निगोद नित्य के भीतर काल अनन्त बसेरा, सुनिये प्राणी० ॥ ८ ॥ मनुष मलेच्छ नीच शूद्रन में चांडालादि घनेरा, सुनिये प्राणी० ॥ ९ ॥ गिरधर या विधि भवमें भटके अब हू चेत सवेरा, सुनिये प्राणी० ॥ १० ॥

(७०)

(दादरा-हम्मच)

सुनलो बात हमारी. जा भव तारनहारी ॥ टेक ॥ जा भव मारन करम निवारन आरत तृष्णा भारी ॥ आरत रौद्र कुध्यान आठ विधि ने भव २ दुःख कारी ॥ १ ॥ हरी नरी (बहुतर्सी) मद भरी खानी नकल पराई नारी ॥ मूढमती अज गृह पत्रपती विनय जगत उरधारी ॥ २ ॥ इन्हें तजो जिनदेव भजो भवि भजो उदर अघ टारी ॥ रात्रि अहार करो न धरो एक उपरा ध्यान सँभारी ॥ ३ ॥ धरि सन्तोष दको पर दोषन पांचों धरम विहारी ॥ रागद्वेष मद मोह लोभ छल पट दूषण तज भारी ॥ ४ ॥ धरि दश लक्षण तप द्वादश कर बाईस

परीषह सारी ॥ धरौ चारित तेरह विधि नीकें गिरवर वर शिवनारी ॥ ९ ॥

(८०)

(गीत—वंदना के समय)

इक अरज सुनौ महाराज हमारे दुखित करम दूरी करौ ॥ टेक ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी आठ करम दुखदाइया ते करावत भ्रमण अपार, हमारे दुखित करम दूरी करौ ॥ १ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी ज्ञानावरणी छाइयौ तिन प्रकृति पंच परकार, हमारे० ॥ २ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी दर्शन आवरणी अवै नव भेद न दर्श कराय, हमारे० ॥ ३ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी, करम वेदनी दो कही असि धार पयूप समान, हमारे० ॥ ४ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी मोह करम वारुणि समा सो स्वपर रूप आछाद, हमारे० ॥ ५ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी, आयु चार गति के विषैं जा भरमावत अति क्रूर, हमारे०॥६॥ अरे हांहो कि प्रभुजी नाम तिराणवे दुखभरी बहु नाम धराये मोह, हमारे० ॥ ७ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी करम गोत्र घर कृति समा जिमि ऊंच नीचें जगमांहि, हमारे ॥ ८ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी अन्तराय पन विधि कहा सब कार्य करै अन्तराय, हमारे० ॥ ९ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी ये वसु रिपु दूरी करौ मम पूरौ कीजे ज्ञान,

हमारे० ॥ १० ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी आप अनेक सुगुन भरे, सो दीजे मैं थारो दास, हमारे०॥ ११ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी पद पंकज सेवा मिले भव २ तुम संगति पाय, हमारे०॥ १२ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी अब करुणा करके प्रभू मुझे दीजे आतम ज्ञान, हमारे० ॥ १३ ॥ अरे हांहो कि प्रभुजी आप तरो पर तारक हो, अब गिरधर को देव तार, हमारे०॥ १४ ॥

(८१)

(गीत-शास्त्र सभामें)

अब के हो भजलो भगवान फिर पीछे पछताओगे ॥ ॥ टेक ॥ अरे कबहूं जाय निगोद बसे थे पंच गोल्ल तहां दुख की थान ॥ कबहूं जाय नरक गति पहुंचे सात व्यसन के कर्त्ता जान ॥ १ ॥ अरे छेदन भेदन शूलारो-हन पेलन यंत्र करोंनन थान ॥ कुंभीपाक वैतरणी खारी घंटाकार असिपत्र प्रमाण ॥ २ ॥ अरे सेज कंटकी लाल पूतली रांग गाल डाले मुखतान ॥ ऊंट ग्रीव मुख आकृति योनी उछलन तड़फन चीरन थान ॥ ३ ॥ अरे नारक जीव परस्पर मारें असुर कुमार भिड़ावें आन ॥ नरकके दुःख की खबर तहां ही यहां तो है संक्षिप्त कहान॥४॥ अरे कबहूं जाय कुटिल भावन तें पाई हो तिर्यग दर वान ॥ भय अहार परिग्रह मैथुन ये संज्ञा चारों हैं सर-

कान ॥ ५ ॥ अरे कबहूं जाय सुरग पद पायौ मानसीक दुख कौ घमसान ॥ कबहूं अबला कौ तन धारौ जहां कपट छल की है खान ॥ ६ ॥ अरे कबहूं जाय मलेच्छखंड में उपजै तहां महा अज्ञान ॥ कबहूं मानी रागी द्वेषी माया अहंकार दुखखान ॥ ७ ॥ अरे अब के नर तन उत्तम पायौ उत्तम कुल प्रारब्ध महान ॥ तातें गिरवर कहत चंदेरी भजलो हो श्री जिन भगवान ॥८॥

(८२)

गीत (वन्दना के समय)

भजलै श्री जिनवरजी की बानी, बानी के सुनतन करम नशानी कि पावे सुरग अमानी, कि भजले०॥टेक॥ चतुरयोग जिनवरजी ने भाषे चार कथा सुखदानी ॥ ग्यारह अंग पूर्व चौदह युत चौदह वाहिज थानी, कि भजलै० ॥१॥ जिन-वाणी से गती सुधरगई नाग नागिनी सानी ॥ भूपति तो यमदंड हुओ इक तिनधारी जिनवानी, कि भजलै० ॥२॥ जिनने मन वच तन कर धारी पाई अविचल रानी ॥ जिनवानी गज कपि अज धारी पहुंचे स्वर्ग विमानी, कि भजलै० ॥ ३ ॥ जिनवाणी नृप शेखर फणपति परम प्रीति उर आनी ॥ जिनवानी इक ग्वाल जीव धरि वरी महा शिवरानी, कि भजलै०॥ ४ ॥ जिनवाणी धारे विन भवि-जन गति चारों भरमानी ॥ जो जिनवानी धारै उर में

पावै शीतल पानी, कि भजलै० ॥ ५ ॥ जिनवच अमृत पान करे तें पावे अनुपम थानी ॥ समकित ज्ञान चरण धारण करि वरै शीघ्र शिवरानी, कि भजलै० ॥ ६ ॥ तातें अब जिन वर वचनामृत पान करौ भवि प्राणी ॥ गिरवर सो यांचत प्रभुजी से दीजे मोक्ष निशानी, कि भजलै० ॥७॥

(८३)

(गीत—हरसमय)

मैं तोसों पूंछौं शीलसन्धुद्रा कौन २ व्रत पाले जी ॥ शील को पाल कुशील को त्यागौ तप में मेरौ मन लागौ जी ॥१॥ मैं तोसों पूंछौं पन्नाजु बाई कौन २ तीरथ वन्दे जी ॥ शिखर जी वन्दे सौनागिर वन्दे गिरनारी में मोरौ मन लागौ जी ॥ २ ॥ मैं तोसों पूंछौ गेंदीजु बाई कौन २ शास्तर भ्यासे जी ॥ नाटक जी भ्यासे पद्म पुराण अभ्यासे गोमटसार में मेरौ मन लागौ जी ॥ ३ ॥ कार्तिक सुदी पूनम के दिन यह ऊधौ गारी गाई जी ॥ गारी जु गाई पढ़के सुनाई सब जीवों मन भाई जी ॥ ४ ॥

(८४)

(गीत—हरसमय)

इक तप को बंगला छुवाओ झरोखा विरतन कौ ॥ टेक ॥ इक तप कौ दियला लिसाओ तो तेल बरै आठौं करमन कौ ॥ इक तप की सेज बिछाव दुलीचा

संजम कौ ॥ १ ॥ येतौ सुमति कुमति दोइ साथ पलँग पर पौढ गईं ॥ छोड़ौ २ जी कुमति मोरौ साथ तो तोसैं मैं दूरई भली ॥ २ ॥ चलौ चलौ जी गुरुन के पास तो हमरी तुमरी न्याव चुके ॥ ऐसी भई दोइ की तकरार तो गुरुजी के पास चली ॥ ३ ॥ विच मिलगये श्री मुनि-राज तो हाथ में विवेक की छड़ी ॥ करदे २ गुरुजी मोरौ न्याव कुमति से दूर ही भली ॥ ४ ॥ तब गुरुजी कुमति करी दूर सुमति को संग लई ॥ कहें देवीदास विचार सुमति मोहि होहु सही ॥ ५ ॥

(८५)

गीत (शास्त्रजीके वक्त)

सुनलो अब श्रावक तनौं व्रत नेम महाना ॥ टेक ॥ सात व्यसन पण पाप कौ तजियौ दिलजाना ॥ चार कषाय कलंक को छोड़ौ दुखदाना ॥ १ ॥ अविरत योग वशी करौ मिथ्यात्व नशाना ॥ पंद्रह जे परमाद हैं छोड़ौ अलसाना ॥ २ ॥ वस्तु अभक्ष्य न खाइये गुनमूल प्रमाना ॥ सकल दोष समकित तने तजिये वसु माना ॥ ३ ॥ विकथा आश्रव जे बुरे षट रिपु छुड़काना ॥ तेरह काँठी-वार जे तिन मारौ बाना ॥ ४ ॥ बारह व्रत तप भावना दश धर्म महाना ॥ रत्नत्रय सोलह तथा चौभाव सुमाना ॥ ५ ॥ तेतिस अर्थ सुतत्व हैं सत्तावीस वखाना ॥ त्रेसठ

गुण छत्तीस गुण धारौ समताना ॥ ६ ॥ सत्रह नेम धरौ सदा सातों असनाना ॥ सात मौन धारौ सवै नव गो परखाना ॥ ७ ॥ आठ ध्यान खोटे तजौ धारौ शुभ ध्याना ॥ किरिया तीन तिरेपना धारौ मन दाना ॥ ८ ॥ लाज आठ जागा नहीं कीजे भवि प्राना ॥ छह परिवर्तन लाइयौ षट् धरौ सयाना ॥ ९ ॥ षट् काया मन छेडियौ तजि आच्छादाना ॥ वसु विधि श्री जिन पूजियौ पावौ वसु थाना ॥ १० ॥ मीठी वाणी बोलिये जीवन हित छाना ॥ मत्सर ममता छोड़िये होवे कल्याणा ॥ ११ ॥ औषधि शास्त्र अभय तथा आहार सुदाना ॥ द्वारापेक्षण कीजिये विधि द्रव्य समाना ॥ १२ ॥ मिथ्या परणति परिहरौ पहलो गुणठाणा ॥ राना रावल रंकिया सब करम बसाना ॥ १३ ॥ अपनी २ गरज के सारे दुनियाना ॥ तुम पर शल्य निवार के भजलो भगवाना ॥ १४ ॥ किरिया से भोजन करौ पीवौ जलछाना ॥ निशदिन ज्ञान विरागसों परखौ निजध्याना ॥ १५ ॥ रागद्वेष विषया सवै जु कषाय न भाना ॥ निन्हव गौरव छांड़दो माड़ौ क्षपकाना ॥ १६ ॥ एक द्वि तिय पण तीन हैं अठवीस जु ज्ञाना ॥ छयालिस वसु षट् तीसपन विस नमत सयाना ॥ १७ ॥ चांदी पुर वदली तनुज गिरवर मतिमाना ॥ विनवत हैं करजोर के दीजे शुभ थाना ॥ १८ ॥

(८६)

(गीत—शास्त्र समय)

अपनौ रूप निहारियौ भला चेतन प्यारे ॥ तुम तो चारों गुणभरे त्रिभुवन पति वारे ॥ टेक ॥ क्रोध कपट छल लोभ जे पुद्गल परजारे ॥ विषय कषाय दुखी महा तुमसे सब न्यारे ॥ १ ॥ सांख्यमती, शिव, मस्करी क्षणकी वटपारे ॥ वौधमती मासानियां जे षट् मत वारे ॥ २ ॥ अपनी २ सिर करें दुर्गति दातारे ॥ एक जैनमत एन है शिव सुख करतारे ॥ ३ ॥ वपु संसार असार जे दुख सुख पतियारे ॥ पूरण गलन स्वभाव तन जग अथिर लखारे ॥४॥ सब जग भीतर जानिये घट देखनहारे ॥ इक चेतन सब ऊपरै निश्चय व्यवहारे ॥ ५ ॥ खोटा २ सब कहें कोई खोटा ना रे ॥ गिरवर है खोटा महा कर जीव दयारे ॥ ६ ॥

(८७)

(गीत—हरसमय)

मैं तो कैसी करूं कहां जाऊं मोरी गुइयां (सखी) सो पिया तो गये गिरनारी को ॥ टेक ॥ व्याहन आये निशान घुमाये करी वरात तयारी को. मैं तो०॥१॥ छल इक भयौ हरि पशु घिरवाये उन तप लीन्हों ब्रह्मचारी को. मैं तो०॥ २ ॥ पिय सँग जाय तपस्या लीनी उग्रसैन

की कुँवारी को. मैं तो०॥ ३॥ नेम प्रभू अद्भुत शिव पायौ अच्युत राजुल नारी को. मैं तो० ॥ ४ ॥ गिरनारी पर तीन कल्याणक वन्दौं वारंवारी को. मैं तो०॥ ५॥ गिरवर अरज करत जिनवर से दीजे मोक्ष अपारी को. मैं तो कैसी करूं कहाँ जाऊं मोरी गुइयां पिया तो गये गिरनारीको॥६॥

(८८)

(गीत-हरसमय)

वनज नहीं व्यापार नहीं चेतनराय काहे को आये, अरे भाई काहे को आये ॥ टेक ॥ सुमति कुमति की न्याव लगी है सो तो न्याव निवेरन आये, अरे भाई न्याव निवेरन आये ॥ १ ॥ जाय उतारी है समकित वजार में सो सब कोई देखन आये, अरे भाई सब कोई देखन आये ॥ २ ॥ कुमति नारि को कोउ न पूंछे सो सुमति की राह गहाये, अरे भाई सुमति की राह गहाये ॥ ३ ॥ कुमति नारि को तजी दूर तें सुमति सखी उर लाये, अरे भाई सुमति सखी उरलाये ॥ ४ ॥ कुमति नारि को संग वुरौ है चहुंगति में भरमाये, अरे भाई चहुंगति में भरमाये ॥ ५ ॥ सुमति सुहागिन कंठ लगाओ सुरग मुकति लेजाये, अरे भाई सुरग मुकति लेजाये ॥ ६ ॥ सतगुरु सीख हृदय में धरके सो लाल विनोदीने गाये, अरे भाई लाल विनोदीने गाये ॥ ७ ॥

(८९)

गीत (वन्दना के समय)

हरष उर धारके श्री शिखर सम्मेद निहार, हरप उर धारके ॥ टेक ॥ प्रथम सौनागिरि वन्दके जहां नंगानंग कुमार ॥ तहां तें लश्कर वन्दनों रे अतिशय शोभासार, हरष उर धारिके ॥ १ ॥ बहुरि आगरा वन्दि के मथुरा पुर पहुंचे सार ॥ जंबू स्वामी शिव गये चौरासी थान विचार, हरष उर धारिके ॥ २ ॥ और कानपूर वन्दिये चैत्यालय भवन सुढार ॥ लखनौ बन्दों भाव सों पुनि रत्नपुरी नमि सार, हरष, उर०॥ ३ ॥ नगर अयोध्या आवस्ती किहकंधा पुरी सँभार ॥ तहां तें गोरखपुर विषैं पुनि छवड़ा अतिशय सार, हरष उर०॥ ४ ॥ पुनि पोद-नपुर वन्दिये उर चम्पापुर पुनि धार ॥ भागलपुर तें आयकें ग्रेडी टेशन जिनगार, हरप उर० ॥ ५ ॥ नदी बड़ाकर बन्दिये श्री वीर नमौं गुणकार ॥ शिखर समेद नमौं प्रभू मोहि भवदधि पार उतार, हरष उर० ॥ ६ ॥ मुनिवर शिवपुर थल गये जहां संखासंख चितार ॥ जिनवन्दन जिन ने करी तिन कीन्हों भव दुख छार, हरष उर० ॥७॥ पुनि प्रदक्षिणा देय के जनमादिक मरण विडार ॥ बहुविधि भक्ति करीजिये तहँ हे प्रभु जी मोहि तार, हरष उर० ॥ ८ ॥ तहां ते कलकत्ता गये

पुनि जाय पुरा वख्तयार ॥ पावापुर कुन्दनपुरी फिर गुना जी और विहार, हरष उर० ॥ ९ ॥ पंच पहाड़ी वन्दिये श्री राजग्रही मन धार ॥ विपुलाचल, सोना गिरी इत्यादिक आनँद कार, हरष उर०॥ १० ॥ वहुरि नगर आरा नमौं अट्ठाविस भवन निहार ॥ काशी भेलू पुर विषैं पुनि पुरी भदैनी त्यार, हरष उर० ॥ ११ ॥ सिंघपुरी चन्दापुरी सकटावन प्राग विचार ॥ कौसम्बी-पुर वन्द के कटनी मुड़वाड़ा सार, हरष उर० ॥ १२ ॥ वांदकपुर से आय के कुंडलपूर वन्दन कार॥ फिर वीना नैनागिरी पुनि नगर मँडावर सार, हरष उर०॥ १३ ॥ नगर पपौरा टेरिया द्रौणागिरि चैत्य चितार ॥ वैरासिया थूवौनजी पुनि वन्दौं जिन खंदार, हरषउर० ॥ १४ ॥ पचरारी वारागडा कोलारस पाटन चार ॥ जयनि नगर कोटा श्री अरु नगर चँदेरी सार, हरष उर०॥ १५ ॥ गोलाकोट सागौद सौ रे दक्षिण वन्दनकार॥ गिरनारी शत्रुंजये श्री ऋषभ जिनेश्वर सार, हरषउर० ॥ १६ ॥ गर्भ जन्म तप ज्ञान सों निर्वाण गये असरार ॥ तिनकों वन्दों भाव सों ते दुखहर आनंदकार,हरष उर० ॥ १७ ॥ मो उर ज्ञान जगौ जवै तव देखे नैन पसार ॥ गिरवर दास तनौ अवै प्रभु कीजे भवदधि पार, हरष उर धारि के० ॥ १८॥

(९०)

गीत (शास्त्र सभा के समय)

देव धर्म गुरु को भजौ हो आतम ज्ञानी ॥ टेक ॥ देव छ्यालिस गुण भरे सब रतन अमानी ॥ दोष विवर्जित रूप या छवि नैन हरानी ॥ १ ॥ तन परमौदारीक है लोकालोक लखानी ॥ युगपत काल अनन्त की देखन सब जानी ॥ २॥ सूरज कोटि सु चन्द्रमा कोड़ा कोड़ानी॥ दीपत तिनकी मन्द है जिन परम प्रमाणी ॥ ३ ॥ रुधिर धवल मलमूत्र है नहिं खेद निशानी ॥ भवि जीवन हितकारने भाषी जिनवानी ॥ ४ ॥ जीव दया ता में कही सब दोष विहानी ॥ परम पुरुष पीवें तहां वचनाम्बुज पानी ॥ ५ ॥ सुरपति नर खगपति तहां राजा अरु रानी ॥ सुन श्रीजी के वैन को होगये सरधानी ॥ ६ ॥ चार संघ मुनि अर्जिका श्रावक श्रावकानी ॥ हिरदें हरष बढावही धनि ते भवि प्राणी ॥ ७ ॥ ऐसे देव दयाल के चरणन शिर लानी ॥ गिरवर को दीजे अबै सेवा सुखदानी ॥ ८ ॥

(९१)

गीत (शास्त्र सभा के समय)

चेतन अब निज कारज जानौ ॥ टेक ॥ तुम्हरौ कारज है तुमही में सो किमि करत भुलानौ ॥ तुम्हरौ पथ

तुमही को शोभित ज्यों जल पय के थानो ॥ १ ॥ तुम सब राजन के हौ राजा सो अब वेग पिछानौ ॥ तुम अधिपति भूपति चक्रेश्वर निज सम्पति सुख मानौ॥२॥ तुम्हरौ रूप तुम्ही को शोभित ज्यों उदयाचल भानौ ॥ तुम में हम में सब सिद्धन में भेद कछू नहिं मानौ ॥ ३ ॥ तुम्हरौ रूप अनन्त चतुष्टय तुम गुण ज्ञायक ज्ञानौ ॥ तुम पंडित कवि शूर शिरोमणि तुम सब भीतर स्यानौ ॥ ४ ॥ तुम सब कर्म हतन के कारण का तौ अधिकौ नानौ ॥ अब के अवसर दाव मिलौ है कोटां रतन समानौ ॥ ५ ॥ सो नाहक खोओ मनि भाई फिर पीछे पछतानौ॥ तुम सज्जन सरदार मोक्ष सुख यही तुम्हारौ थानौ ॥ ६ ॥ ताकौ शीघ्र करौ तुम प्रापत होवे भव दुख हानौ ॥ तातें गिरवर मन वच तन करि धरि जिन वच सरधानौ ॥७॥

(९२)

गीत (शास्त्र सभा में)

भले भज नामारे पंच परमेष्ठी देवा ॥ टेक ॥ इन परमेष्ठी रूप विचारौ धारौ गुन उर भेवा ॥ पहिले भजलो गुणहि छयालिस श्री अर्हंत कहेवा ॥ १ ॥ दूजे सिद्ध आठगुण वन्दों आनन्दों हरषेवा ॥ पुनि तीजे आचारज गुरुवर छत्तीसों गुण लेवा ॥ २ ॥ उवझायाजी चौथे वन्दों जे पच्चिस गुण वेवा ॥ पंचम साधु शिरोमणि वन्दों अठ-विस गुण साधेवा ॥ ३ ॥ छट्टे जिन आगम मन धरिये

हरिये दुर्मति खेवा ॥ सातयें जिनवर भवन अनूपम वन्द नाय कर लेवा ॥ ४ ॥ अष्टम धर्म जिनेश्वर भाषित धरौ आठ पहरेवा ॥ नवमें प्रतिमा कीर्त अकीर्तम शुध मन हो बन्देवा ॥ ५ ॥ इस विधि नव प्रकार सम्यक् धरि देव नमों नव देवा ॥ शतक एक तेतालिस ऊपर गुण समस्त कर भेवा ॥ ६ ॥ ऐसे देव सुदेव नमों तिन नमत पाइयत भेवा ॥ तिनपद गिरवरदास सुनौ भवि कीजे नित प्रति सेवा ॥ ७ ॥

(९२)

गीत (शास्त्र सभा में)

चेतन अपनी सुरत सम्हारौ, अव तुम अपनी सुरत सम्हारौ ॥ टेक ॥ काना से आयौ कहां तूं जैहै काना रहौ लुभयारौ ॥ मात पिता दारा सुत बांधव कोई न संग सहारौ ॥ १ ॥ गति चारों में तूं भटकत है कर मिथ्या पतियारौ ॥ रहौ अनादि निगोद उभय विधि भुगतौ दुःख अपारौ ॥ २ ॥ तिर्यग मांहि वहुत दुख भोगे नरकन कौ नहिं पारौ ॥ कवहूं जाय पुन्य भागन तें पायौ सुरगत प्यारौ ॥ ३ ॥ काकतालवत् पाय मनुष गति दूर करौ अँधियारौ ॥ कर श्रद्धान वचन जिनवानी परम प्रीति उर धारौ ॥ ४ ॥ अष्ट कर्म ये वहु दुख दाता तिनकौ कर निरवारौ ॥ परनारी से भूल न वोलो शील

धरम उर धारो ॥ ५ ॥ विषय कषाय दुखित दोनों भवतिन कौ कर परिहारौ ॥ तातें अब सब नारिं पुरुष हौ सुनलो सीख हमारौ ॥ ६ ॥ सम्यक चरित धरौ उरमांही जो है तारन हारौ ॥ अरज करत शिर धरत चरण तल प्रभु कीजे भवपारौ ॥ ७ ॥ अल्पबुद्धि मोहि दीन जानके दीजे सेव तुम्हारौ ॥ गिरवर दास चंदेरी वाले को कीजे उपगारौ ॥ ८ ॥

(९४)

गीत—(हरसमय)

अब जराय दैहौंरे, मैं खिपाय दैहौंरे, ये दईमारे कर्मों को जराय दैहौंरे ॥ टेक ॥ श्रीकृष्णने छल बल करके पशू जीव घिरवाये ॥ पिय पशुवन पर करुणा करके गिरनारी को धाये ॥ १ ॥ मात पिता मोहि आज्ञा दीजे मैं गिरनारी जाऊं ॥ प्रभुसे अग्निरूप दिक्षा ले कर्मों की खाक उड़ाऊं ॥ २ ॥ काहे को बेटी उदास होन है क्यों मन में पछताय ॥ सुन्दर सुघर ढूंढ कर वर मैं तोकों देहुं विवाह ॥ ३ ॥ बात कहत में लाज न आवे तुम को तात सुजान ॥ तुम समान सब जग को मानों नेम बिना सोई आ[illegible] कही तात ने तब समझाके कुल में दाग न आवे ॥ नेम कुंवर पर दिक्षा लेओ दुष्ट कर्म जल जावे ॥ ५ ॥ राजुल ने जब आज्ञा पाई पहुंची प्रभुके पास ॥

बोली हे प्रभु दिक्षा दीजे करूं कर्म कौ नाश ॥ ६ ॥ नेमीश्वर प्रभुने तप करके केवल ज्ञान उपायौ ॥ समवशरण में भवि जीवन को मोक्ष पंथ दरशायौ ॥ ७ ॥ जो पद प्रभू आपने पायौ सो अब मोकौं देहु ॥ नाथूराम कहैं करजोरें ये भारी जस लेहु ॥ जराय देहौंरे, मैं खिपाय-देहौंरे, इन दईमारे कर्मों को जरायदेहौंरे ॥ ८ ॥

(९५)

गीत-(हरसमय)

बातौ मड़रही दिन अरु रात, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ टेक ॥ बातौ काहे की चौपड़ बनी अरु काहे की बनी सोलह गोट, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ १ ॥ बातौ चारों गति चौपड़ बनी जग जीव बने सोलह गोट, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ २ ॥ वेतो काहे के पाँसे बने अरु काहे के घर कहलाय, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ ३ ॥ वे तो चौरासी लख योनि हैं सो तो चौपड़ के घर जान, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ ४ ॥ अरु राग द्वेष, दोई करम हैं सो तो उलट पुलट परें पांस, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ ५ ॥ [illegible] ममताके पाँसे परें सो तो कर्मों लैगाय दये दाव, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ ६ ॥ वेतौ गिरवर दास अर्जी

करें मोरे प्रभु काटौ करम के जाल, लाल करमन वश चौपड़ मड़रही हो ॥ ७ ॥

(९६)

गीत-(हरसमय)

येहो को रहौ हरिया लै निकरौ कोवा भई समराई, हमपै करम मोहनियां डाली ॥ टेक ॥ जे चेतन रहे हरिया हरले निकरौ इन्द्री भई समराई, हमपै करम० ॥ १ ॥ येहो लोभ मोह दोई चाकर राखे क्रोधके संगे यारी, हमपै करम० ॥ २ ॥ ऐहो सात मनों की खेती करके आठ विषैं रखवारी, हमपै करम० ॥ ३ ॥ कहैं देवीदास सुनौ भाई जैनी श्रावक कुल अवतारी, हमपै करम० ॥ ४ ॥ येहो कर्म नाशकर शिव सुख पावो होय हृदय सुख भारी, हमपै करम० ॥ ५ ॥

(९७)

गीत-(हरसमय)

रथ ठाडौ करौ भगवान, तुम्हारे संग हमहू चलें वनवासा को ॥ टेक ॥ सो मोरे प्रभु काहे के रथला बने अरु काहे के जड़े हैं जड़ाव, तुम्हारे संग० ॥ १ ॥ अरे हां मोरे प्रभू चन्दन के रथला बने अरु मुतियों के जड़े हैं जड़ाव, तुम्हारे संग० ॥ २ ॥ अरे हां मोरे प्रभु रथला में को बैठियौ अरु कोहै झुलावनहार, तुम्हारे संग०

॥ ३ ॥ अरे हां मोरे प्रभु राजुल व्रत रथ बैठियौ, गिरवर नेमजी चलावनहार, तुम्हारे संग० ॥ ४ ॥

(८९)

गीत-(हरसमय)

कैसी करूं कहां जाऊं मोरी गुइँयां पिया तो गये गिरनारी को ॥ टेक ॥ व्याहन आये निशान घुमाये करी बरात तयारी को ॥ १ ॥ छल इक भयौ पशु जिय घिरवाये प्रभु व्रत लियौ ब्रह्मचारी को ॥ २ ॥ पिया सँग धाय तपस्या लीनी उग्रसैनकी कुमारी को ॥ ३ ॥ नेम प्रभू शिव पुर पद पायौ अच्युत राजुल नारी को ॥ गिरवर अरज करत प्रभु सन्मुख दीजे कर्म निवारीको॥४

(९९)

गीत-(हरसमय)

तुम सुनियौ हो दीन दयाल हमारी इक चोरी भई ॥ सो तौ उस चोरी कौ करहु न्याय, हमारी इक चोरी भई ॥ १ ॥ मेरौ कुमति ज्ञान लियो लूट, हमारी इक चोरी भई ॥ २ ॥ मेरौ शील विरत गयौ छूट, हमारी इक चोरी भई ॥ ३ ॥ मेरे दया धरम गयौ टूट, हमारी इक चोरी भई ॥ ४ ॥ वसु करमन कीन्हीहै लूट, हमारी इक चोरी भई ॥ ५ ॥ सो तो गिरवर शिव फल देहु अटूट, हमारी इक चोरी भई ॥ ६ ॥

(१००)

गीत (जन्म समय का)

लिया आज प्रभूजीने जन्म सखी चलो अवध पुरी गुन गावन को ॥ टेक ॥ तुम सुनौरी सुहागिन भाग भरी चलौ मुतियन चौक पुरावन कौ ॥ १ ॥ सुवरण कलश धरौ शिर ऊपर जल ल्यावें प्रभु न्हावन को ॥२॥ भर भर थाल दरव ले २ कर चलौ री अर्घ चढावन को ॥ ३ ॥ नैनानंद कहै सुन सजनी फिर नहिं अवसर आवन को ॥ ४ ॥

(१०१)

(घोरी-सुनौजू की चाल-विवाह में)

झूनागढ़ से तेजन आई दूलह खैंच बुलाई सुनौजू ॥ पांव पैजना जराव कें सोहैं मुख कंचन कर हार सुनौजू॥ अंगारी पिछाडी रेशम की सोहै मलयागिर की मेख सुनौजू ॥ पीठ पलैंचा जीन जरदकौ मुहरा रतन जड़ाव सुनौजू ॥ झूनागढ़ तें तेजन आई दूलह करत सिंगार सुनौजू ॥ इह तेजन मेरो चढे हो लाड़लौ तिहि कारण इह आइ सुनौजू ॥ पाखर डारें ठाड़ी वछेरी दुलह करत सिंगार सुनौजू ॥ पाग जरकसी वागौ पहिरें फैंटा झालावार सुनौजू ॥ पांवन मोजे जराव के सोहैं पग-रख की छवि न्यारि सुनौजू ॥ पांचों कपड़ा पहिर

लाड़लौ शिर चन्दनकी खौर सूनौजू॥ कंठ श्रीदुलरी तिलरी छबि मौंतिन माल सुहाइ सुनौजू॥ माथें मुकुट कुंडल अति सोहैं चंद सुरज दुरिजांय सुनौजू॥ इत्यादिक वहु पहिर यदुनन्दन वाजे वजत अपार सुनौजू॥ इन्द्रादिक जाके भयेहैं वराती सुरपति चमर दुरांय सुनौजू॥ छप्पन कोट जादौं युत सँग हरि, हलधर पान खवाँय सूनौजू॥ नर नारी सव मंगल गावें किन्नर नाद सुनावें सुनौजू॥ मंगल गीत पढ़ैं सव वनिता हासविलास करांय सुनौजू॥ हर्षित ब्रजनारी सव सुन्दर नाटक नृत्य करायँ सुनौजू॥ इहि विधि वरात सजी नेमी प्रभुकी वर्णन कौन कराय सुनौजू॥ भविजन तजि सव राग रंगको गढ़ गिरनारी धाय सुनौजू॥ शिवनारीको हाथ पकड कर ता सँग रमन कराय सुनौजू॥ ऐसो नेमीश्वर व्याहु वखानौ सव जन चित्त लगाय सुनौजू॥

(१०२)

(गीत—ढाल घोरीकी—व्याह में)

नेमीश्वरकौ व्याहु बखानों लघुमति कही न जाईजू॥ आगम पंथ पुरानन जानों सुनो भव्य चित लाईजू॥ मनसा चंचल घोड़ी आई दुल्लह खेंच वुलाईजू॥ घोड़ी है जिनवानी समरस वाग सुलक्षण दाईजू॥ तिहि घोड़ी चढ़ि चलह लाड़लौ मुकति बधूको व्याहनजू॥ सुरपति

हाथ चमर शिर ढोरत माथे छत्र विराजैजू ॥ दशलक्षण शिर मुकुट विराजे इह गुन माल विचारीजू ॥ गुरुके वचन श्रवण में कुंडल राखे चतुर सँभारीजू ॥ रत्नत्रय कर कंकन सोहै सो छवि कहिय न जाईजू ॥ धर्मदया तन पनरथ सोहै राखी चतुर बनाईजू ॥ पंच महाव्रत वागौ पहिरैं ध्यान ज्ञान शिर पागैजू ॥ आठों मद तजि फैंटा सोहैं सूतन मुकति सुरंगीजू । पन अरु वीस सु पावन मोजे जावग शील सुरंगीजू ॥ यह सिंगार कियौ नेमीश्वर जोग लियौ गिर ऊपरजू ॥ इतनौ पहिर तब चले यदुनन्दन मुक्तिवधूको व्याहनजू ॥ इन्द्रादिक जाके भये हैं वराती वाजत अनहद वाजेजू ॥ सोलह कारण भये वराती आठों कर्म नशायेजू ॥ त्रेपन किरियां भई हैं दांजनी मंगल गाँन सुहायेजू ॥ पंचशब्द तहँ वाजे वाजत कर्मनष्ट आगौनीजू ॥ वरसत पुष्पवृष्टि सुर नभतें किन्नर गान करावेंजू ॥ मुक्ति वधू सँग भांवर कीन्ही कीना सुक्ख विलासाजू ॥ इहि विधि व्याह वखानों भविजन गावौ परम हुलासाजू ॥ जिनवर गुण को वरण सकै कवि गणधर पार न पावेंजू ॥ जो कोई पढे सुने अरु ध्यावे मन वांछित फल पावैजू ॥

(१०३)

(सौहरौ—जन्म समय)

प्रणमौं आदि जिनेश, जगत परमेशके चरण मनाऊं

हो ॥ शुभ मंगल दातार परम सुखकार सोहरे गाऊं हो ॥ १ ॥ जे चौदह कुलकर उपजे तीजे कालमें, तीजे कालमें हो ॥ चौदमें नाभि नरेन्द्र, श्री नाभिनरेन्द्र नमाऊं भाल मैं हो ॥२ ॥ सुरग पुरी सम नगर अयोध्या, सम नगर अयोध्या शोभा कहा २ गाइये हो ॥ माता मरु-देवीजू की कूंख, देवीजू की कूंख गरभ प्रभु आइयौ हो ॥ ३ ॥ षट् महिना पहिले से रतन की बरषा मनोहर बरषा हो ॥ होरही अँगना मँझार नाभि वर द्वार देख मन हरषा हो ॥ ४ ॥ सुरभि सुगंधी फूल कल्पतरु फूल देव बरसावें हो ॥ चालै हो मन्द सुगंध पवन, सुगंध पवन दुं-दुभी बाजैं हो ॥ ५ ॥ बोलत जय २ शब्द, वे जै जै शब्द, मनोहर शब्द गगन में होवें हो ॥ मंगल चार अनूप, सबन-सुखरूप, सबन सुखरूप, हरष मय सोभें हो ॥ ६ ॥ तजि सर्वारथ सिद्ध गरभ जब आये, गरभ प्रभु आये हो ॥ माता देखे हैं सोलह स्वप्न, वे सोलह स्वप्न, बहुत सुख पाये हो ॥ ७ ॥ छाई कपूर सुगंध, अगर की सुगंध चंदन की सुगंधी हो ॥ मानों फैली है धर्म सुगंध, व दिव्य सुगंध, फूलन की सुगंधी हो ॥८॥ होरही जगमग जोति रतन की जोति दीपकी जोति कहीं नहिं पाइये हो ॥ माता सोवे है सुखकी सेज, फूलन की सेज, मनोहर सेज उपमा क्या गाइये हो ॥ ९ ॥ भई है सोने की रात

सोने की रात, नींद सुखपाई नींद सुख पाइयौ हो ॥ वदि अषाढ की दोज शुभ निशि गाई गरभ निशि गाइयौ हो ॥ १० ॥ श्री आदीश्वर अवतार प्रथम अवतार हमें जगतार चरण नित ध्याऊं हो॥ दयाचन्द विनवै करजोर भलां कर जोर चरण की ओर सोहरे गाऊं हो ॥ ११ ॥

(१०४)

(सोहरौ—जन्म समय)

पूरी भई है रैन, वड़े सुखचैन नींद से जागी हो ॥ जहां बाजै वजहँ प्रभात, श्रवण हरषात मधुर ध्वनि लागी हो ॥ १ ॥ धुनि भई भेरी मृदंग वीन सहनाई, वड़ी सुखदाई शंखधुनि छाई हो ॥ वंदीजन विरद वखानैं वहुत हरपाने अनूपम गाई हो ॥ २ ॥ मन्द २ चालै है पवन, मनोहर पवन, मनोहर पवन पत्र कछु हालैं हो ॥ बोलै कोयल मोर मराल, विरछ की डाल विरछ की डालैं हो ॥ ३ ॥ होरही रतन की वरषा, फूल की वरषा आंगन में वरषा हो ॥ देखै हैं मात प्रभात, प्रफुल्लित गात, प्रफुल्लित गात वहुत मन हरपा हो ॥४॥ पहरैं है वस्त्र मनोग वहुत शुभ जोग उन्हींके जोग वसन आभूषण हो ॥ चली २ है मात जगमात, सुमन की वात राय से पूंछन हो ॥ ५ ॥ आवत देखी राजा

महाराज, राज महाराज, आदर से लीनीहो ॥ अर्ध सिंहासन राय वड़ौ सुखपाय वैठक तव दीनी हो ॥ ६ ॥ प्राण वल्लभे चन्द्र मुखी, मृग लोचनी हे मृग लोचनी हो ॥ जग जीवन सुखकार परम सुखकार आगमन कहिये हो ॥ ७ ॥ जग माता करजोरे, वचन धीरे वोले राय से वोली हो ॥ पिछली रैन भये सोलह स्वप्न मनोहर स्वप्न तासु फल कहिये हो ॥ ८ ॥ सुन राजा हँस वोले विहँस कर वोले प्रेम कर वोले सुनौ तुम रानीहो ॥ हू है आदि कुंवर अवतार प्रथम अवतार निश्चय हम जानी हो ॥ ९ ॥ ये सुन रानी आनन्द भयौ आनन्द हिये हुलसानी परम हुलसानी हो ॥ हूहै श्री आदि कुंवर अवतार, कुंवर अवतार कूंख अव जानी हो ॥ १० ॥ श्री रिषभ देव, जिनदेव करें सुरसेव किन्नरी गावें किन्नरी गावें हो ॥ जहँ मंगल हों दिनरैन वड़े सुखचैन महासुखचैन सुनत सुख पावें हो ॥ ११ ॥ गावै जो ये सोहरौ मंगल कारी सवन सुखकारी सवन सुखकारी हो ॥ ताके मंगल हौंय दिनरैन वढ़ै सुख चैन पढ़ै नरनारी हो ॥ १२ ॥ श्री आ-दीश्वर महाराज सुफल है काज सुफल होय काज भजौ नरनारी भजौ नरनारी हो ॥ दयाचन्द कहैं करजोर, कहैं करजोर शरण हों तोर वंदना म्हारी हो ॥ १३ ॥

(१०५)

(सोहरौ जन्म समय)

सब देवी छप्पन कुंवारी रुचकगिर वासनी कुलगिर वासनी हो ॥ करतीं माता जू की सेव परम सुख पावतीं हो ॥ टेक ॥ कोई दरपण लीयें हाथ, खड़ी सब साथ, दीप लियें थारी हो ॥ कोई गूंथें फूलन माल, वजावें ताल सुगावें ख्याला हो ॥ १ ॥ कोई माताको करतीं सिंगार, पहिरावतीं हार, आभूषण माला हो ॥ लियें पंखा ढोरें हाथ नमावें माथ देवन की वाला हो ॥२॥ कोई चुन २ सेज विछावें, कोई मंगल गावें कोई पांय पलोटें हो ॥ कोई पूंछतीं मिलकर बात धन्य यह स्यात मात समझावें हो ॥ ३ ॥ प्रभु तीन ज्ञानके धारी, येक अवतारी गरभ में सोहें हो ॥ ज्यों दर्पण में प्रतिविम्ब मनोहर विंव सूर्य दुति होवे हो ॥ ४ ॥ कछु गर्भ वेदना नाहिं, अकुलता नाहिं, पीत दुति नाहीं हो ॥ तिन त्रिवलि भंग नहिं कोय, हर्ष हिय होय अतिशय प्रभु जानों हो ॥५॥ गर्भ कल्याणक महिमा सौहरौ भारी, कथा अति भारी हो ॥ दश अतिशय हैं जिनराय पावै को पारी, पावै को पारी हो ॥ ६ ॥ श्री आदीश्वर जिननाथ, जगत के नाथ, त्रिलोकी नाथ के सोहरे गावें हो ॥ दयाचंद चरण को चेरो दास है तेरौ, दास है तेरौ दरश नित पावै हो ॥७॥

(१०६)

बुंदेला (पुत्रोत्पत्ति के समय)

जिनेश्वर त्रिसला के हो, दुलारे सिद्धारथ के हो स्वामी वीरनाथ जिनराय ॥ टेक ॥ कुंडनपुर जन्मन लियौ हो, स्वामी रतन देव बरसाय ॥ जिनेश्वर त्रिसला के हो, दुलारे सिद्धारथ के हो स्वामी वीरनाथ जिन राय ॥ १ ॥ केशरिया रँग तन बनौ हो, स्वामी केसरि चिन्ह लखाय ॥ जिनेश्वर० ॥ २ ॥ सिद्ध शिला पावा-पुरी हो, स्वामी मोक्ष पधारे जाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ३ ॥ औरंगजेब राजा चढौ हो, स्वामी इजमत दई बताय ॥ जिनेश्वर० ॥ ४ ॥ देश देश के देवता हो, स्वामी नक बंगत करवाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ५ ॥ कुंडनपुर महावीर को हो, स्वामी टांकी मारीजाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ६ ॥ दूध धार छूटी जबै हो, स्वामी पलँग पछारे राय ॥ जिनेश्वर० ॥ ७ ॥ भौंर मछौं उड़ २ लगीं हो, स्वामी फौज भगी चिल्लाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ८ ॥ बादशाह विनती करी हो, स्वामी वार २ शिरनाय ॥ जिनेश्वर० ॥ ९ ॥ अब प्रभु रक्षा मम करौ हो, स्वामी दुलीचन्द गुणगाय ॥ जिनेश्वर त्रिसला के हो, स्वामी० ॥ १० ॥

(१०७)

वनरा—(व्याहुमें)

चाल (कजरी शहर से नीकरे वारे वनरारे, लाला कर हथियन कौं मोल, सुघर शाही वनरारे)

कौन नगर सें रिंग चले, लटकन वनरारे ॥ लाला कौन कौ यह दल जाय, सुघर शाही वनरारे ॥ १ ॥ नगर द्वारिका से चले, लटकन वनरारे ॥ लाला जदु-वंशी दल जाय, सुघर शाही वनरारे ॥ २ ॥ कौन के हौ तुम लाड़ले, लटकन वनरारे ॥ लाला कौन नगर के राय, सुघर शाही वनरारे ॥ ३ ॥ समद विजै जू के लाड़ले, लटकन वनरारे ॥ लाला नग्र द्वार्का के राय, सुघर शाही वनरारे ॥ ४ ॥ कौन के हौगे भजीहजे, लटकन वनरारे ॥ लाला कौन के लहुरे वीर, सुघर शाही वनरारे ॥ ५ ॥ वसुदेव जी के हैं भतीहजे, लट-कन वनरारे ॥ लाला कृष्णके लहुरे वीर, सुघर शाही वनरारे ॥ ६ ॥ कौन सी जननी के लाल हौ लटकन वनरारे ॥ लाला कौन वहिन के वीर, सुघर शाही वन-रारे ॥ ७ ॥ शिव देवीमात के लाल हैं, लटकन वनरारे ॥ लाला वहिन सहुद्रा के वीर सुघर शाही वनरारे ॥ ८ ॥ सज के वरात जु रिंग चले लटकन वनरारे ॥ लाला व्याहु करन कों जांय सुघर शाही वनरारे ॥ ९ ॥ वीच वगीचे मेलियौ लटकन वनरारे ॥ लाला झूनागढ

(जूनागढ़) से ग्राम सुघर शाही बनरारे ॥ १० ॥ टीका होन कों जब चले, लटकन बनरारे ॥ लाला पशु जिव करी है पुकार, सुघर शाही बनरारे ॥ ११ ॥ कृष्णहि तुरत बुलाइयौ, लटकन बनरारे ॥ लाला ये जिव क्यों घिरवाये, सुघर शाही बनरारे ॥ १२ ॥ भील किरात बरात में, लटकन बनरारे ॥ लाला इनकौ करैं हो अहार सुघर शाही बनरारे ॥ १३ ॥ सुनकर रथ से ऊतरे, लटकन बनरारे ॥ लाला पशु जिव दये हैं छुड़ाय, सुघर शाही बनरारे ॥ १४ ॥ मौर उतार के धर दियौ, लटकन बनरारे ॥ लाला कंकन डारौ है टोर, सुघर शाही बनरारे ॥ १५ ॥ गिरनारीकों चढ चले, लटकन बनरारे ॥ लाला धर मन में वैराग्य सुघर शाही बनरारं ॥ १६ ॥ ठाडे पिता समझावते, लटकन बनरारे ॥ लाला भोगौ हो भोग अपार सुघर शाही बनरारे ॥ १७ ॥ भोग बुरे संसार में, लटकन बनरारे ॥ लाला तात कों यों समुझाय सुघर शाही बनरारे ॥ १८ ॥ इतनी सुनी राजुल जबै, लटकन बनरारे ॥ लाला गिरी है धरनि मुरझाय, सुघर शाही बनरारे ॥ १९ ॥ मात पिता समझावते लटकन बनरारे ॥ पुत्री क्यों करै सोच विचार, सुघर शाही बनरारे ॥ २० ॥ देशों से भूप बुलाय हों, लटकन बनरारे ॥ अर फिरकें रचहौं व्याह, सुघर शाही बनरारे ॥ २१ ॥ बात अजुक्ती क्यों

कहौ, लटकन वनरारे ॥ तुम बोलौ न बोल कुबोल, सुघर शाही वनरारे ॥ २२ ॥ तुम सम पितु सब कों लखों, लटकन वनरारे ॥ मेरे प्रीतम गये गिरनार, सुघर शाही वनरारे ॥ २३ ॥ गहनों उतार के रिंग चली, लटकन वनरारे ॥ लाला पहुंची है प्रभुके पास, सुघर शाही वनरारे ॥ २४ ॥ हाथ जोर ठाडी भई, लटकन वनरारे ॥ प्रभु हम को दिक्षा देहु सुघर शाही वनरारे ॥ २५ ॥ दुर्द्धर तप उनने कियौ, लटकन वन-रारे ॥ लाला पहुंची है स्वर्ग मझार, सुघर शाही वन-रारे ॥ २६ ॥ केवल पा प्रभु शिवगये लटकन वनरारे ॥ प्रभु हम को पार लगाव सुघर शाही वनरारे ॥ २७ ॥

(१०८)

वनरा—व्याह में

चाल (तुम्हें वुलाय गईरे वन्ना, सैन चलाय गईरे वन्ना)

तुम्हें वुलाय गईरे वन्ना, सैन चलाय गईरे वन्ना, वौतौ चेतन नारी तुम्हारी, तुम्हें वुलाय गई० ॥ १ ॥ वौतौ सुमति सरीखी प्यारी, वौतौ अनुभव सुखकर-तारी, तुम्हें वुलाय गई० ॥ २ ॥ वौतौ शिवपुर की अधिकारी, वौतौ भव जीवन हितकारी, तुम्हें वुलाय गई० ॥ ३ ॥ वौतौ कुमतै करते न्यारी, वौतौ कहती है लल-कारी, तुम्हें वुलाय गई० ॥ ४ ॥ वौतौ छोड़ कुमति से -नी, फिर पहुंचौ तुम शिव द्वारी, 'तुम्हें वुलाय गई०

॥ ५ ॥ बौतौ नाथूराम अनारी, तूं तजदै कुमता नारी,
तुम्हें बुलाय गईरे बन्ना, सैन चलाय गईरे बन्ना ॥ ६ ॥

उपसंहार ॥

दोहा ॥

समधन सम धन अन नहीं, सो समधी आधीन ॥
समधन मम धन जानिये, ता बिन चित्त मलीन ॥ १ ॥

कवित्त ॥

समधन के निकट नित्य रहत अर्हंत देव, समधन तें रमत नित सिद्ध परमात्मा ॥ समधन की चाह कर ध्यान धरें आचारज, उपाध्याय साधु औ अव्रती अंतरात्मा ॥ समधन से प्रेम करें लोक परलोक बने, पायौ समधन तिन मम धन कौ रस बमा ॥ समधन के प्रेम मांहि फँस रह्यौ मेरौ मन, हे प्रभु ! समधी देहु मम धन करि के क्षमा ॥ १ ॥

सोरठा ॥

समधन समधी प्रेम, मम धन मम धी है नहीं ॥
निजधन निज धी जेम, सो नित मन में धारिये ॥ १ ॥
समधन सुख करतार, समधी तें नित रमत है ॥
यामें फेर न सार, मोक्ष मार्ग हित कारिणी ॥ २ ॥
समधन सम धन नाहिं, शोध शोधिया ने कियौ ॥
तातें मम उर चाह, निशदिन सम धन मिलन की ॥ ३ ॥

सम्पूर्णम् ॥